सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 41, नई दिल्ली । सोमवार, 21 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 मुस्तफाबाद हादसे के बाद 19 घंटे तक चला राहत और बचाव कार्य....

06 यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका

08 रेलवे लाइन निर्माण के विरोध में ग्रामीणों और पुलिस के बीच झड़प, एक की मौत

परिवहन विभाग में आनलाइन आवेदन प्रक्रिया के नाम पर एकत्र किया जाने वाला जनता का अति गोपनीय डाटा आम बाजार में आसानी से उपलब्ध, कौन है जिम्मेदार ?

संजय बाटला

- गृह मंत्री, गृह मंत्री कार्यालय और साइबर क्राइम को रोकने के लिए कार्यरत सभी विभाग भारत सरकार सभी सबूत उपलब्ध होने के बावजूद और सब कुछ जानते हुए भी चुप हैं आखिर क्यों ?
- क्या भारत देश के आम नागरिकों के साथ अति विशिष्ट श्रेणी में आने वाले नागरिकों की सुरक्षा में सेंध लगाने वालों के खिलाफ कार्यवाही नही करने का अर्थ यह तो नहीं की उनकी सुरक्षा के प्रति किसी की भी जिम्मेदारी नहीं ?
- अगर गृह मंत्रालय की भारत देश के नागरिकों और अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार नहीं है तो जनता के पैसों से अति विशिष्ट व्यक्तियों को जेड+ सुरक्षा प्रदान क्यों करता है ?

नई दिल्ली। हम पिछले कई महीनों से आप सभी के साथ श्री अश्विनी वैष्णव माननीय कैबिनेट मंत्री (रेल मंत्री; मंत्री सूचना और प्रसारण; मंत्री इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, भारत सरकार) के कार्यालय में सबूतों के साथ परिवहन विभाग में अति विशिष्ट व्यक्तियों और आम जनता के उपलब्ध सुरक्षित अति गोपनीय डाटा की उपलब्धता ऐप पर खुले तौर पर होने के प्रमाण पहुंचा रहे हैं पर उसके बावजूद अति गोपनीय डाटा को बाजार में खुले आम उपलब्ध करवाने वालो और विभाग के अंदर उनके सहयोगियों पर कोई कार्यवाही नहीं हुई।

क्या भारत में रहने वालों की जान माल में उनके अंतर्गत आने वाले विभाग के अधिकारियों द्वारा सेंध लगवाने पर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करवाना उनका दायित्व नहीं.

आज जो जानकारी आपको बताने जा रहे हैं उससे स्पष्ट होता है की जनता के अति गोपनीय डाटा को बाजार में खुले आम उपलब्ध करवाने के पीछे मंत्रालय में कार्यरत किसी बड़े अधिकारी का ही हाथ है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बजट अनुभाग द्वारा 21 मार्च 2023 को जारी पत्र के अनुसार एन.आई.सी. में किसी भी पद पर कोई भी और कैसी भी भर्ती या तकनीकी सेवा बाहरी या सीधे तौर पर नहीं की जा सकती हैं। कापी स्लगन

एफ.सं.5(1)/2020-बजट भारत सरकार

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सीजीओ कॉम्प्लेक्स (बजट अनुभाग)

नई दिल्ली-110003, दिनांकः 21.03.2023

विषयः वस्तुओं एवं सेवाओं की 100% खरीद GeM के माध्यम से - CoS की सिफारिशें - के संबंध में।

1. कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में सचिवों की समिति की बैठक 20 फरवरी, 2023 को हुई, जिसमें मंत्रालयों/विभागों और सीपीएसई द्वारा सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद की समीक्षा की गई।

2. समिति ने सिफारिश की है कि सभी मंत्रालय/विभाग GeM के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की 100% सार्वजनिक खरीद सुनिश्चित करने का प्रयास कर सकते हैं और GeM के बाहर कोई भी सार्वजनिक खरीद ऐसे विचलन के लिए रिकॉर्ड किए गए औचित्य के साथ अपवाद होनी चाहिए। GeM पर उपलब्ध नहीं होने वाली वस्तुओं और सेवाओं की खरीद को संबंधित मंत्रालय/विभाग के सीईओ/संगठनों के प्रमुखों और वित्तीय सलाहकारों द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए और संबंधित सचिव द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए। GeM के माध्यम से सार्वजनिक खरीद के GFR के नियम 149 के उल्लंघन के लिए अधिकारियों की जिम्मेदारी तय करने की भी सिफारिश की गई है।

3. तदनुसार, MeitY के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत सभी संगठनों के प्रमुखों से अनुरोध है कि वे GeM के माध्यम से 100% खरीद के लिए प्रयास करके उपर्युक्त का अनुपालन सुनिश्चित करें।

4. यह संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

(मीनाक्षी कुमार)
भारत सरकार के अवर सचिव

टेलीफ़ोनः 24301266
को
1. सभी जी.सी.
2. महानिदेशक (एनआईसी)/सीईओ (यूआईडीएआई)/महानिदेशक (एसटीक्यूसी)
3. डीजी(सीईआरटी इन)/सीसीए
4. एमडी (एनआईसीएसआई)/एमडी (डीआईसी)/सीईओ (एनआईएक्सआई)
5. MeitY के अंतर्गत स्वायत्त निकायों के प्रमुख
में कॉपीः
1. सचिव के ओएसडी/संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार के पीपीएस
2. जेडी (फिन)/ डीडी(फिन)/ एसओ (फिन)/ एसओ(फिन.II)/एसओ(बजट एवं ऑडिट)/ डीडीओ
3. गार्ड फ़ाइल

लेकिन एन.आई.सी. में ई- ट्रांसपोर्ट परियोजना के महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों, सेवाओं, समर्थन और बुनियादी ढांचों को बनाए रखने के लिए एन.आई.सी.एस.आई. पैनल के माध्यम से संसाधनों को 6 महीने (1 अक्तूबर 2023 से 31 मार्च 2024) की अवधि के लिए किराए पर लेने का प्रस्ताव किया (कापी स्लगन)

विषयः वाहन, सारथी और संबंधित अनुप्रयोगों के विकास और समर्थन के लिए नियोजित जनशक्ति का नवीकरण।

एनआईसी ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट वाहन, सारथी और अन्य संबंधित अनुप्रयोगों के लिए सॉफ्टवेयर विकास, रखरखाव और सहायता सेवाओं के लिए एनआईसीएसआई पैनल से काम पर रखे गए लोगों का उपयोग करता है। यह लोग दिल्ली, हैदराबाद और विभिन्न राज्य एनआईसी केंद्रों में तैनात हैं।

जनशक्ति के लिए मौजूदा कार्य आदेश 30 सितंबर, 2023 को समाप्त होने जा रहे हैं।

GeM के माध्यम से जनशक्ति की भर्ती की प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है और इसके लिए RFP अब अंतिम चरण में है। GeM पोर्टल पर बोली लगाने के लिए इसे जल्द ही NICSI को प्रस्तुत किया जाएगा। हालाँकि, GeM के माध्यम से बोली प्रक्रिया और कार्य आदेश जारी करने में कुछ महीने लगेंगे और हम अप्रैल 2024 तक ही जनशक्ति की भर्ती कर पाएंगे।

इसलिए, फिलहाल ई-ट्रांसपोर्ट परियोजना के महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों, सेवाओं, समर्थन और बुनियादी ढांचे को बनाए रखने के लिए, एनआईसीएसआई पैनल के माध्यम से मौजूदा जनशक्ति संसाधनों के कार्यकाल को तुरंत बढ़ाना आवश्यक है। तदनुसार, एनआईसीएसआई पैनल के माध्यम से संसाधनों को 6 महीने (1 अक्टूबर, 2023 से 31 मार्च, 2024) की अवधि के लिए किराए पर लेने का प्रस्ताव किया गया है ताकि सेवाओं में कोई रुकावट न आए।

एनआईसीएसआई द्वारा टियर 1ए, टियर 2 और टियर 3 संसाधनों के लिए जारी किए गए पैनल के साथ-साथ स्टार्टअप सेवाओं, सॉफ्टवेयर समर्थन आदि के लिए मौजूदा पैनल का उपयोग इन मौजूदा तकनीकी/गैर-तकनीकी जनशक्ति संसाधनों को मैप करने के लिए किया गया है।

तदनुसार, तैनाती कार्यक्रम आदि के साथ जनशक्ति आवश्यकताओं का मसौदा विवरण तैयार किया गया है। विभिन्न सूचीबद्ध विक्रेताओं को कार्य आदेशों का आवंटन और तदनुसार, विस्तृत अनुलग्नक के साथ कार्य-आदेशों का विक्रेता-वार वितरणः-

यहां मैं आपका ध्यान एनआईसी परिवहन विभाग में जनशक्ति संसाधनों की भर्ती के संबंध में हो रहे गंभीर उल्लंघनों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। MIETY मानदंडों के अनुसार, सभी संसाधनों को गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GEM) पोर्टल के माध्यम से काम पर रखा जाना चाहिए। हालाँकि, यह पता चला है कि विभाग के भीतर सक्षम अधिकारियों द्वारा इन मानदंडों का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है।

यह उल्लंघन भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा देने की इच्छा से प्रेरित प्रतीत होता है, जहां निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए GEM के माध्यम से भर्ती की उचित प्रक्रिया को दरकिनार कर दिया जाता है। इस तरह की कार्रवाइयां न केवल स्थापित नियमों का स्पष्ट उल्लंघन हैं, बल्कि इससे भारत सरकार की प्रतिष्ठा और राजस्व को भी काफी नुकसान पहुंचा है।

मैं मंत्रालय से आग्रह करता हूँ कि वह इन भ्रष्ट गतिविधियों की गहन जाँच करे, नियमों का उल्लंघन करने वालों की पहचान करे और यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त कार्रवाई करे कि भविष्य में ऐसी घटनाएँ न दोहराई जाएँ। नियमों के उल्लंघन ने विभाग की अखंडता को काफी नुकसान पहुँचाया है और इन कार्यों के पीछे के व्यक्तियों को जवाबदेह ठहराना महत्वपूर्ण है।

मुझे विश्वास है कि मंत्रालय इस मुद्दे के समाधान के लिए तत्काल और उचित कदम उठाएगा तथा एनआईसी परिवहन विभाग में पारदर्शिता और जवाबदेही बहाल करेगा।

आपकी जानकारी हेतु बता दें की सभी जानकारी उपलब्ध कराने के साथ इंटरनेट पर ऐप के माध्यम से उपलब्ध आम जनता के साथ कई वीवीवीआईपी के परिवहन विभाग में उपलब्ध डाटा की कॉपीज प्रस्तुत करने पर भी विभाग द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई।

अब यहां सवाल यह उठता है की आखिर क्यों

1. श्री अश्विनी वैष्णव, माननीय कैबिनेट मंत्री (माननीय रेल मंत्री; सूचना और प्रसारण; इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, भारत सरकार।)
2. श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री,
3. गृह मंत्रालय एवम्
4. साईबर क्राइम प्रवर्तन शाखा

सब कुछ जानते और सबूत उपलब्ध होने के बाद भी जनता के अति गोपनीय डाटा को बिकवाने और बेचने वालो पर कार्यवाही क्यों नहीं कर रहे।

सड़कों के लिए 2.3 लाख करोड़ रुपये की योजना: 11 शहरों में रिंग रोड बनाए जाएंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ओडिशा की अर्थव्यवस्था को 2036 तक 0.5 ट्रिलियन डॉलर और 2047 तक 1.5 ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य है। इसके लिए मजबूत बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है। इसे ध्यान में रखते हुए, राज्य में 2029 तक सड़क विकास के लिए 2,30,000 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना है। 2,30,000 करोड़ रुपये में से एनएचएआई 1,50,000 करोड़ रुपये और राज्य सरकार 1,25,000 करोड़ रुपये उपलब्ध कराएगी।शहरी विकास राज्य मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने आज यहां इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) द्वारा आयोजित 'विकसित ओडिशा 2036 विजन' नामक राष्ट्रीय सम्मेलन में कहा कि रिंग रोड से शुरू करके राज्य भर के 11 प्रमुख और बड़े शहरों में रिंग रोड, गोपालपुर-जयपुर ग्रीन रोड कॉरिडोर आदि का निर्माण किया जाएगा।

अब वाहनों पर ईंधन की पहचान बताने वाला कलर कोडेड स्टीकर लगाना अनिवार्य

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में अब वाहनों पर ईंधन की पहचान बताने वाला कलर कोडेड स्टीकर लगाना अनिवार्य होगा। परिवहन विभाग ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देते हुए कहा है कि बिना स्टीकर के प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र (पीयूसीसी) जारी नहीं किया जाएगा। वाहन मालिकों को यह स्टीकर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट (एचएसआरपी) के साथ मिलता है लेकिन दोबारा लगवाने पर शुल्क देना होगा जिसका विरोध हो रहा है।

नई दिल्ली। आपका वाहन किस ईंधन पर चल रहा है, इसकी पहचान प्रदर्शित करना अब अनिवार्य होगा। इसके लिए वाहन पर कलर कोडेड स्टीकर लगाना होगा जो वाहन में इस्तेमाल किए गए ईंधन के बारे में बताता है।

परिवहन विभाग ने 27 जनवरी के सुप्रीम कोर्ट के एमसी मेहता बनाम भारत संघ मामले का हवाला देते हुए कहा है कि वाहन के विंडशील्ड पर कलर कोडेड स्टीकर के बिना किसी भी वाहन को प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र (पीयूसीसी) जारी नहीं किया जाएगा।

ईंधन के हिसाब से स्टीकर निर्धारित

बता दें कि वाहनों के लिए उनके ईंधन के हिसाब से स्टीकर निर्धारित होते हैं, जिनसे उनके ईंधन की पहचान की जा सके। ये स्टीकर वाहन के लिए जारी हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट (एचएसआरपी) के साथ दिए जाते हैं। लेकिन अगर ये कुछ साल बाद खराब हो जाते हैं या वाहन में किए गए किसी बदलाव की वजह से हट जाते हैं तो इन्हें दोबारा लगाया जा सकता है।

लेकिन इसके लिए वाहन मालिकों से शुल्क लिया जाता है। जिसका विरोध किया जा रहा है। वाहन मालिकों का कहना है कि जब एचएसआरपी के लिए पैसे दे दिए गए हैं तो स्टीकर के लिए पैसे नहीं लिए जाने चाहिए। यह काम एक निजी कंपनी को दिया गया है।

TRAFFIC ADVISORY

IN CONNECTION WITH A SPECIAL EVENT ON 21.04.2025 (MONDAY) FROM 06:00 PM TO 09:00 PM, SPECIAL TRAFFIC ARRANGEMENTS HAVE BEEN MADE TO ENSURE THE SMOOTH REGULATION OF TRAFFIC

TRAFFIC RESTRICTIONS

To facilitate effective traffic management around Sardar Patel Road, Panchsheel Marg, Kamal Ataturk Marg, Dhaula Kuan Flyover, NH-48, GDR and PDR, the following restrictions will be implemented:

- No vehicle will be allowed to halt or park on Sardar Patel Marg, Kamal Ataturk Road, and surrounding areas
- No vehicle will be allowed to halt or park on Gurugram Road, Parade Road, Thimmaiya Marg, Air Force Road and other surrounding areas
- Improperly parked vehicles on the above roads will be towed away and prosecuted. Towed

SUGGESTED ROUTES

- Commuters going towards 11 Murti to RML may use Vande Matram Marg from Dhaula Kuan Flyover to R/A Shankar Road, Talkatora Road and Sheikh Mujib-Ur-Rehman Marg
- Commuters going towards Dhaula Kuan Flyover from IGIA or vice versa may use Rao Tula Ram Marg

#DPTrafficAdvisory

Delhi Traffic Police | @dtptraffic

यातायात सलाह
ट्रैफ़िक पुलिस दिल्ली

21.04.2025 (सोमवार) को शाम 06:00 बजे से रात 09:00 बजे तक एक विशेष कार्यक्रम के संबंध में, यातायात के सुचारू नियमन को सुनिश्चित करने के लिए विशेष यातायात व्यवस्था की गई है।

यातायात प्रतिबंध

सरदार पटेल रोड, पंचशील मार्ग, कमाल अतातुर्क मार्ग, धौला कुआं फ्लाईओवर, एनएच-48, जीडीआर और पीडीआर के आसपास प्रभावी यातायात प्रबंधन की सुविधा के लिए निम्नलिखित प्रतिबंध लागू किए जाएंगे:

सरदार पटेल मार्ग, कमाल अतातुर्क रोड और आसपास के इलाकों में किसी भी वाहन को रुकने या पार्क करने की अनुमति नहीं होगी

गुरुग्राम रोड, परेड रोड, थिमैया मार्ग, एयरफोर्स रोड और अन्य आसपास के इलाकों में किसी भी वाहन को रुकने या पार्क करने की अनुमति नहीं होगी

उपरोक्त सड़कों पर अनुचित तरीके से पार्क किए गए वाहनों को हटा दिया जाएगा और उन पर मुकदमा चलाया जाएगा।

सुझाए गए मार्ग

11 मूर्ति से आरएमएल की ओर जाने वाले यात्री धौला कुआं फ्लाईओवर से आर/ए शंकर रोड, तालकटोरा रोड और शेख मुजीब-उर-रहमान मार्ग तक वंदे मातरम मार्ग का उपयोग कर सकते हैं।

आईजीआईए से धौला कुआं फ्लाईओवर की ओर जाने वाले या इसके विपरीत जाने वाले यात्री राव तुला राम मार्ग का उपयोग कर सकते हैं।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस
@dtptraffic

General Instructions:

Motorists are requested to remain patient, adhere to traffic rules and cooperate with traffic personnel for a smooth experience. Follow the directions of the police deployed at key intersections.

For real-time updates and assistance, connect with Delhi Traffic Police through the following channels:

- Website: **https://traffic.delhipolice.gov.in**
- Facebook: **https://www.facebook.com/dtptraffic**
- Platform X: **https://x.com/dtptraffic**
- Instagram: **https://www.instagram.com/dtptraffic**
- WhatsApp: **8750871493**
- Helpline Numbers: **1095 / 011-25844444**

#DPTrafficAdvisory

Delhi Traffic Police | @dtptraffic

यातायात सलाह
ट्रैफ़िक पुलिस दिल्ली

सामान्य निर्देश :

वाहन चालकों से अनुरोध है कि वे धैर्य रखें, यातायात नियमों का पालन करें और यातायात कर्मियों के साथ सहयोग करें ताकि यातायात सुगम हो सके। प्रमुख चौराहों पर तैनात पुलिस के निर्देशों का पालन करें।

वास्तविक समय अपडेट और सहायता के लिए, निम्नलिखित चैनलों के माध्यम से दिल्ली यातायात पुलिस से जुड़ें :

वेबसाइट : https://traffic.delhipolice.gov.in
फेसबुक : https://www.facebook.com/dtptraffic
प्लेटफ़ॉर्म X : https://x.com/dtptraffic
इंस्टाग्राम : https://www.instagram.com/dtptraffic
व्हाट्सएप : 8750871493
हेल्पलाइन नंबर : 1095/011-25844444
#डीपीट्रैफिकएडवाइजरी
दिल्ली ट्रैफिक पुलिस
X @dtptraffic

मूलों में जन्म लेने वाले बच्चों का भविष्य !

ज्योतिष की सटीक व्याख्या और फल के लिए हमेशा नक्षत्रों पर विचार किया जाता है. नक्षत्रों के अलग अलग स्वभाव होते हैं और उनके अलग अलग फल भी होते हैं. कुछ नक्षत्र कोमल होते हैं कुछ कठोर और कुछ उग्र होते हैं . उग्र और तीक्ष्ण स्वभाव वाले नक्षत्रों को ही मूल नक्षत्र , सतैसा या गण्डात कहा जाता है. जब बालक इन नक्षत्रों में जन्म लेता है तो विशेष तरह के प्रभाव देखने में आते हैं. इन नक्षत्रों में जन्म लेने का असर सीधा बच्चे के स्वभाव और स्वास्थ्य पर पड़ता है. ज्योतिष की सटीक व्याख्या और फल के लिए हमेशा नक्षत्रों पर विचार किया जाता है. नक्षत्रों के अलग अलग स्वभाव होते हैं और उनके अलग अलग फल भी होते हैं. कुछ नक्षत्र कोमल होते हैं कुछ कठोर और कुछ उग्र होते हैं . उग्र और तीक्ष्ण स्वभाव वाले नक्षत्रों को ही मूल नक्षत्र , सतैसा या गण्डात कहा जाता है. जब बालक इन नक्षत्रों में जन्म लेता है तो विशेष तरह के प्रभाव देखने में आते हैं. इन नक्षत्रों में जन्म लेने का असर सीधा बच्चे के स्वभाव और स्वास्थ्य पर पड़ता है.

कौन-कौन से होते हैं मूल नक्षत्र और और उनका प्रभाव क्या है ?

- मूल ,ज्येष्ठा और आश्लेषा नक्षत्र मुख्य मूल नक्षत्र हैं और अश्विनी,रेवती और मघा सहायक मूल नक्षत्र हैं. !

- इस प्रकार कुल मिलाकर 6 मूल नक्षत्र हैं- अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मघा और रेवती. !

- जब बालक का जन्म इनमे होता है तो बालक के स्वास्थ्य की स्थिति संवेदनशील हो जाती है, !

- माना जाता है कि पिता को नवजात का मुख नहीं देखना चाहिए जब तक इसकी शांति न करा ली जाए. !

- वास्तविकता में केवल नक्षत्रों के आधार पर ही सारा निर्णय नहीं लेना चाहिए !

- पूरी तरह से कुंडली देखकर ही इसका निर्णय करें. !

अगर बच्चे का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ है तो किन बातों का ख्याल रखें ?

- सबसे पहले ये देखें की बच्चे के स्वास्थ्य की स्थिति क्या है और किस कारण से उसको समस्या हो सकती है. !

- पिता और माता की कुंडली जरूर देखें कि उनका और उनपर इस नवजात के जन्म का क्या प्रभाव है.. ?

- अगर बच्चे का बृहस्पति और चन्द्रमा मजबूत है तो बच्चे के स्वास्थ्य का संकट समाप्त हो जाता है. !

- इसी प्रकार से अगर पिता या परिजनों के ग्रह ठीक हैं तो भी चिंता नहीं करनी चाहिए. !

- कोई भी समस्या संस्करों का खेल है , किसी बच्चे का इसमें कोई दोष नहीं होता. !

- वैसे भी 8 वर्ष के बाद मूल नक्षत्र का प्रभाव विशेष नहीं रहता !

क्या करें उपाय अगर मूल नक्षत्र का दुष्प्रभाव तुरंत पड़ने की सम्भावना हो ?

- जन्म के सत्ताईस दिन बाद वही नक्षत्र आने पर नक्षत्र (मूल) शांति करा लें. !

- बच्चे के आठ वर्ष तक हो जाने तक नित्य प्रातः माता-पिता ₹ॐ नमः शिवाय₹ का जाप करें.

- अगर उम्र 8 वर्ष से ज्यादा हो तो मूल नक्षत्र की शांति की आवश्यकता नहीं होती. !

- क्योंकि ज्यादा संकट आम तौर पर 8 वर्ष तक रहता है !

- अगर मूल नक्षत्र के कारण बच्चे का स्वास्थ्य कमजोर रहता हो तो बच्चे की माता को पूर्णिमा का उपवास रखना चाहिए. !

अगर बच्चे के स्वभाव पर मूल नक्षत्र का असर हो तो क्या उपाय करना चाहिए ?

- अगर बच्चे की राशी मेष और नक्षत्र अश्विनी है तो बच्चे को हनुमान जी की उपासना करवाएं !

- अगर राशि सिंह और नक्षत्र मघा है तो बच्चे से सूर्य को जल अर्पित करवाएं. !

- अगर बच्चे की राशि धनु और नक्षत्र मूल है तो गुरु और गायत्री उपासना अनुकूल होगी. !

- अगर बच्चे की राशी कर्क और नक्षत्र आश्लेषा है तो शिव जी की उपासना उत्तम रहेगी. !

- वृश्चिक राशि और ज्येष्ठा नक्षत्र होने पर भी हनुमान जी की उपासना करवाएं.;

- अगर मीन राशि और रेवती नक्षत्र है तो गणेश जी की उपासना से लाभ होगा !

नोटः-- गंड मूल किसी विद्वान ज्योतिषी या पंडित के माध्यम से हर हालत में करानी चाहिए वरना इसका दुष्परिणाम व्यक्ति और उसके माता-पिता को काफी समय तक भुगतना पड़ता है !

लीवर डिटोक्स कीट : मात्र 1 दिन में करें लीवर की सफाई और करें लीवर को नया

जब हम नई गाड़ी खरीदते हैं तो उसका पूरा ध्यान रखते हैं समय पर उसकी सर्विस करवाते हैं, कभी भी पैट्रोल गाड़ी में डीजल नहीं डालते या डीजल गाड़ी में पैट्रोल नहीं डालते, लेकिन भगवान द्वारा दिये गए इस अनमोल शरीर में कुछ भी डालते रहते हैं और इसकी सफाई का ध्यान नहीं रखते।

लीवर डिटोक्स क्यूं करें ? लीवर शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग है जो कई कामों को करता है, जैसे विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना और पोषक तत्वों को संसाधित करना। लिवर डिटॉक्स, जिसे लीवर क्लींज भी कहते हैं, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है और लीवर को स्वस्थ बनाता है

लीवर डिटॉक्स करने के कारण और फायदे

विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना लीवर डिटॉक्स का मुख्य उद्देश्य शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना है जो लीवर के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं

पाचन में सुधारः लीवर डिटॉक्स पाचन में सुधार करता है क्योंकि लीवर पाचन के लिए महत्वपूर्ण है पित्ताश्य की पत्थरी निकालने के लिए जी हाँ अनुभवि चिकित्सक के मार्गदर्शन में हमारी इस लीवर डिटोक्स कीट के माध्यम से पित्ताश्य की पत्थरी भी निकल जाती है।

थायराइड का ज्योतिषीय कारण और उपाय !

थायरॉइड" का कारणः--- थायरॉयड ग्रंथि हमारी गर्दन में स्थित है, और यह ग्रंथि हार्मोन को स्रावित करने के लिए जिम्मेदार होती है, जो मुख्य रूप से हमारे शरीर को ऊर्जा का प्रदान करते हैं। इसलिए, ये हार्मोन हमारे शरीर के लगभग हर अंग को प्रभावित करते हैं । जब यह ग्रंथि बहुत अधिक या बहुत कम हार्मोन बनाने लगती है, तो हम थका हुआ, बेचैन या अचानक वजन कम होने या बढ़ने की समस्या से पीड़ित होने लगते हैं। हालाँकि ये बीमारी शुरूआती दिनों में जानलेवा नहीं है, लेकिन थायरॉइड कैंसर और ऐसे मामलों में जहां सर्जरी की आवश्यकता होती है, वहां स्थिति अधिक गंभीर हो सकती है। थायरॉइड रोग का मुख्य कारण शरीर में आयरन की कमी, अनुवांशिक समस्या, कैंसर ट्यूमर या ऑटोइम्म्यून बीमारियां होती हैं।

लेकिन कभी-कभार व्यक्ति की कुंडली में ग्रहों और नक्षत्रों की दशा में परिवर्तन होने से भी व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो सकता है।

थायरॉइड होने के ज्योतिषीय कारणः-- -थायरॉइड एक ऐसी बीमारी है, जिसका ना तो जल्दी पता चलता है और पता चलने पर ना ही आसानी से इसका इलाज हो पाता है। इसलिए मेडिकल साइंस ये नहीं बता सकती है कि, कोई व्यक्ति कब इस रोग से ग्रसित हो सकता है या नहीं हो सकता। दूसरी तरफ ज्योतिषशास्त्र हमें व्यक्ति की कुंडली में मौजूद ग्रहों और नक्षत्रों की दशा को देखकर इस रोग के होने के कारणों के बारे में जानकारी दे सकता है।

सूर्य और बृहस्पति की युति :---- वो व्यक्ति कभी ना कभी थायरॉइड से पीड़ित हो सकता है जिसकी जन्म कुंडली में सूर्य और बृहस्पति की युति होती है। इसके साथ ही इस युति पर यदि शनि, राहु और मंगल की हानिकारक दृष्टि हो तो भी व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो सकता है। लिहाजा आपकी कुंडली में ऐसे योग होने से आप भी थायरॉइड की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं।

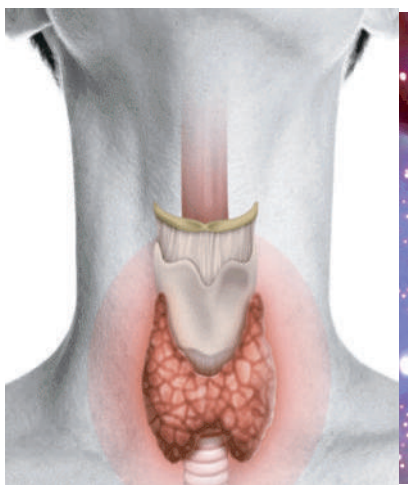

पहला और दूसरा भाव :--- व्यक्ति की जन्मकुंडली के अनुसार यदि जातक के लग्न भाव में किसी हानिकारक ग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति जीवन में कभी भी इस बीमारी से ग्रसित हो सकता है।

₹पहले और दूसरे भाव का स्वामी* :--- जब व्यक्ति की कुंडली के पहले और दूसरे भाव का स्वामी छठे, आठवें और बारहवें भाव में स्थित होता है तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति थायरॉइड का शिकार हो सकता है। ग्रहों की ऐसी अवस्था में होने से व्यक्ति को थायरॉइड से संबंधित अन्य रोग भी हो सकते हैं।

थायरॉइड होने के ज्योतिषीय कारणः-- वैदिक ज्योतिष, वेदों के अध्ययन से जुड़े छह सहायक विषयों में से एक है जो हमें हमारे जीवन में आने वाली किसी भी समस्या के बारे में न केवल भविष्यवाणी देता है बल्कि उन समस्याओं से निबटने में भी सहायता करता है। इसी प्रकार से आज वैदिक ज्योतिष की मदद से हम आपको थायरॉइड जैसी बीमारी से निजात पाने के कारगर उपायों के बारे में बताने जा रहे हैं।

पहले घर के स्वामी की स्थिति को मजबूत करें : -- कुंडली का पहला भाव या लग्न भाव विशेष रूप से व्यक्ति के "स्व" और ऊपरी शरीर के अंगों का कारक माना जाता है। इस प्रकार से, थायरॉइड ग्रंथि हमारे गले में मौजूद होती है, लिहाजा इससे जुड़ी किसी भी प्रकार की समस्या से निजात पाने के लिए व्यक्ति को अपने लग्न भाव के स्वामी की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए और उसकी स्थिति को मजबूत करने का प्रयत्न करना चाहिए।

दूसरे घर के स्वामी को शांत रखें : --- व्यक्ति की जन्म कुंडली में, दूसरा भाव विशेष रूप से बोलने की क्षमता यानि कि गले से संबंधित होता है। लिहाजा यदि किसी व्यक्ति को थायरॉइड रोग के लक्षण नजर आ रहे हैं तो उसे अपने दूसरे भाव के स्वामी को शांत रखने के लिए ज्योतिषीय उपाय करने चाहिये। ऐसा करके गले से जुड़ी विभिन्न समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

जन्म कुंडली में सूर्य को प्रभावशाली बनाएं :--- सूर्य को खासतौर से हिन्दू धर्मशास्त्र में जीवन और ऊर्जा का कारक माना जाता है। इसके साथ ही व्यक्ति की कुंडली की गणना करने के लिए भी सूर्य की स्थिति ख़ासा मायने रखती है। व्यक्ति की कुंडली में ग्रहों की दशा की वजह से थायरॉइड रोग होने का कारण नजर आ रहा हो तो, ऐसे में ग्रहों को कुंडली में अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ ही साथ आदित्य ह्रदय स्तोत्र का पाठ करना भी विशेष लाभकारी साबित हो सकता है। प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठें और उगते हुए सूर्य के दर्शन करें इसस, भी थायरॉइड की समस्या से निजात पाया जा सकता है।

नियमित व्यायाम :--- जैसा कि हम सभी जानते हैं व्यक्ति को स्वस्थ्य रहने के लिए रोजाना सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना चाहिए। थायरॉइड रोग से निवारण के लिए भी यदि सुबह जल्दी उठकर व्यायाम किया जाए और हेल्दी रूटीन अपनाया जाए तो इस रोग से निश्चित रूप से निजात पाया जा सकता है।

सभी को डराने वाले, अपनी पत्नि के अलावा इन 5 से डरते हैं शनिदेव, नाम लेने पर ही खत्म हो जाता है शनि का प्रभाव

शनिदेव के बारे में तो हम सभी जानते हैं कि उनकी दृष्टि राजा को रंक तो रंक को राजा बना देती है. शनिदेव हमेशा कर्मों के आधार पर ही फल देते हैं इसलिए भगवान शिव ने नवग्रहों में शनिदेव को न्याय का देवता बनाया है. अगर कर्म अच्छे होंगे तो शनिदेव अच्छा फल देंगे और कर्म खराब होंगे तो शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या के अशुभ प्रभाव का सामना करना पड़ सकता है. शनिदेव की साढ़ेसाती और ढैय्या का प्रभाव कलियुग में इतना ज्यादा है कि ज्यादातर लोग इनसे डरते हैं. लेकिन क्या आपको पता है सभी को डराने वाले शनिदेव अपनी पत्नी से डरते हैं और ना केवल शनिदेव अपनी पत्नि से डरते हैं बल्कि ऐसे 4 देवता और हैं, जिनसे शनिदेव डरते हैं. इनका नाम लेने भर से शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आती है और शनिदेव भी आशीर्वाद देते हैं. आइए आज हम आपको बताते हैं कि शनिदेव किन देवी देवताओं से डरते हैं

1. पिता की पूजा करने वालों से दूर रहते हैं शनिदेव न्याय के देवता शनि के पिता ग्रहों के राजा सूर्य हैं इसलिए शनिदेव को सूर्यपुत्र भी कहा जाता है. शनिदेव सूर्यदेव की दूसरी पत्नी छाया के पुत्र हैं और भद्रा के भाई हैं. एक बार क्रोध में आकर सूर्यदेव ने शनिदेव का घर जला दिया था. सूर्यदेव को मनाने के लिए शनिदेव ने काले तिल से सूर्यदेव की पूजा की, जिससे वह काफी प्रसन्न हुए. सूर्यदेव की पूजा करने पर शनिदेव की महदाशा के अशुभ प्रभाव में कमी आती है.

2. कृष्ण भक्तों से दूर रहते हैं शनिदेव शनिदेव भगवान कृष्ण से भी डरते हैं इसलिए कृष्ण भक्तों पर शनि की कृदृष्टि का प्रभाव नहीं पड़ता है. पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण की एक झलक पाने के लिए शनिदेव ने मथुरा के पास कोकिला वन में तपस्या की थी, जिससे प्रसन्न होकर कृष्णजी ने कोयल के रूप में शनिदेव को दर्शन दिए. तभी से शनिदेव ने कहा कि जो भी मेरे अराध्य भगवान कृष्ण का नाम भर लेता होगा, उन कृष्ण भक्तों को कभी परेशानी नहीं करेंगे.

3. पीपल की पूजा से नहीं होता शनि का प्रभाव पौराणिक कथाओं के अनुसार, शनिदेव पीपल से भी डरते हैं इसलिए शनिवार के दिन पीपल की पूजा करने की मान्यता है. शनिवार के दिन पीपल को जल देकर सरसों का तेल जलाने वालों पर शनिदेव की कुदृष्टि नहीं पड़ती है. शास्त्रों में बताया गया है कि पिप्लाद मुनी का नाम लेने और पीपल की पूजा करने वालों पर शनिदेव की महादशा का अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा.

4. हनुमानजी की पूजा से दूर होता है शनिदेव का प्रभाव सूर्यपुत्र शनिदेव पवनपुत्र हनुमानजी से भी डरते हैं. जो लोग हनुमानजी की पूजा अर्चना करते हैं और हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करते हैं, उन पर शनिदेव की महादशा का प्रभाव नहीं पड़ता है और सभी दोष भी दूर हो जाते हैं. शनिदेव ने स्वयं कहा है कि जो भी भक्त हनुमानजी की पूजा अर्चना करेगा, उन पर मेरी महादशा का प्रभाव नहीं पड़ेगा.

5. महादेव के भक्तों को देखते भी नही हैं शनिदेव हनुमानजी के अलावा शनिदेव देवों के देव महादेव से भी डरते हैं. शनिदेव भगवान शिव को अपना गुरु मानते हैं इसलिए भगवान शिव के भक्तों पर शनिदेव की कृदृष्टि नहीं पड़ती है. साथ ही शिवजी ने ही सभी नवग्रहों में न्यायाधीश का दर्जा दिया था.

6. शनिदेव की पत्नी चित्ररथ भगवान शिव के अलावा शनिदेव को अपनी पत्नी चित्ररथ से भी डर लगता है. ज्योतिष शास्त्र में बताया गया है कि शनिदेव की महादशा को खत्म करने के लिए शनि की पत्नी के नाम का मंत्र जपना बेहद फायदेमंद माना जाता है. ऐसा करने से शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या के अशुभ प्रभाव में कमी आती है. पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक रात ऋतु स्नान करने के बाद पत्नी चित्ररथ संतान प्राप्ति की इच्छा से शनिदेव के पास पहुंची लेकिन शनिदेव भगवान कृष्ण के ध्यान में लीन थे. उनकी पत्नी इंतजार करते करते थक गई और ऋतुकाल भी खत्म हो गया. इससे क्रोधित होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से आप जिसको देखेंगे, वह पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा. इसलिए शनिदेव अपनी नजरों को नीचे करके ही रखते हैं.

आम एक औषधि भी है

आम का सीजन शुरू हो चूका है और इस सीजन में स्वास्थ्य लाभ भी लेना जरुरी है। आज हम आपको आम के उपयोग बता रहे है इसे जरूर लिख के रखे।

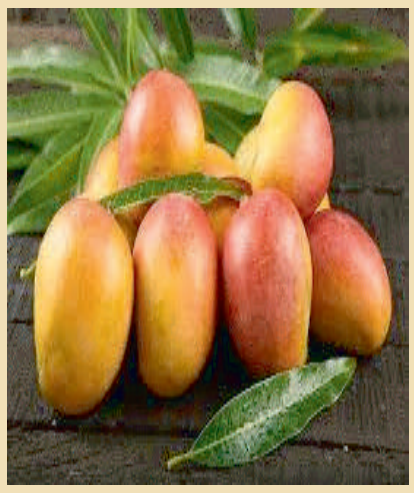

1. सुखी खासी - पके आम को गर्म राख में भूनकर खाने से सुखी खासी ख़त्म हो जाती है। यह प्रयोग खासी ठीक होने तक कर सकते है इसका कोई नुकसान नहीं है।

2. भूक ना लगना - आम के रस में २ ग्राम सेंधानमक तथा थोड़ी सी चीनी मिलाकर पिने से भूक बढती है।

3. खून की कमी - 1 गिलास देसी गाय का दूध और एक कप आम का रस मिक्स करके उसमे एक चम्मच शहद मिलाकर नियमित रूप से सुबह शाम पिने से खून बढ़ता है।

4. दात और मसूड़ों के लिए आम की गुठली की गिरी पीसकर मंजन बनाके रख दीजिये और इससे मंजन कीजिये दात और मसूड़ों के रोग दूर हो जाएंगे।

5. गर्मी में अगर नाक से खून बहता हो तो आम की गुठली की गिरी का एक बून्द रस नाक में टपकाए आराम मिलेगा।

6. आग से जलने पर आम के पत्तो को जलाकर राख बना लीजिए और जले हुए स्थान पर राख को लगा दे इससे जला हवा अंग ठीक हो जाता है।

7. हाथ पैरो की जलन के लिए आम के फूलों को रगड़ने से जलन दूर हो जाती है।

8. अगर पाचन कमजोर है तो 100 मिली मीठे आम के रस में 2 ग्राम सोंठ मिलाकर सुबह भूके पेट पिने से पाचनशक्ति बढती है। याद रहे की रेशेदार आम कब्जनाशक होते है और सेहत के लिए लाभदायक भी होते है।

9. आम के 8 10 ताजे पत्ते रोजाना चबाकर खाने से शुगर कंट्रोल में रहता है।

10. आम के अंदर की छाल का रस दिन में 40 मिली सुबह शाम पिने से बवासीर, रक्तप्रदर और खुनी दस्त में लाभ मिलता है। रस रोजाना ताजा होना चाहिए।

प्रश्न बीज में वृक्ष है या नहीं?

बीज में वृक्ष है भी और नहीं भी। वृक्ष हो सकता है, अगर हम बो दें, तो वृक्ष हो जाएगा। जो कल हो सकता है, वह आज भी कहीं न कहीं भीतर छिपा होना चाहिए, नहीं तो कल होगा कैसे? लेकिन कोई भी बीज मात्र बो देने से वृक्ष नहीं हो जाएगा। जो वृक्ष उसमें छिपा है, वही होगा। नीम के बीज से नीम का वृक्ष पैदा होगा। इसका एक मतलब साफ है कि नीम में नीम का ही वृक्ष छिपा था। जो बीज है आज, वह कल वृक्ष हो सकता है, इसलिए वृक्ष उसमें है - अव्यक्त/अप्रकट। आज वृक्ष हो गया, अब अगर पूछा जाए कि अब बीज कहां है? कल जो बीज था, वृक्ष छिपा था उसमें। आज जो वृक्ष है, उसमें बीज छिप गया। बीज अब भी है, लेकिन अब छिप गया, अप्रकट हो गया। लेकिन हम कहतें हैं कि वृक्ष है, बीज नहीं है। यहां जो आज अप्रकट रूप है, वह कल प्रकट रूप में होगा। इसी प्रकार ईश्वर भी इसी प्रकार दोनों है, कभी वह प्रकट है, कभी अप्रकट है। जगत उसका रूप है, पदार्थ उसका रूप है, और आत्मा उसका ही अरूप/अप्रकट है। थोड़ा जटिल है लेकिन असत नहीं है। कभी दिखता है कभी नहीं दिखता है। जो इस दिखने या नहीं दिखने के राज़ को जान गया, केवल वही उस सर्वशक्तिमान को जान सकता है।

"आत्मविश्वास को स्वयं पर बाहर से नहीं थोपा जा सकता, आत्मविश्वास भीतर से आता है स्वयं को जानने से।"

यह स्वयं को जानना विचार के तल पर हो सकता है तथा अनुभव के आधार पर।

एक मित्र ने पूछा-ये आपके विचार हैं या अन्य के?

विचार और अनुभूति भिन्न हैं।

विचार एक प्रकार से मान्यता है जिसे बुद्धि निर्मित करती है।

जब बुद्धि, अनुभूति को पढ़ती है,सुनती है तब वह उसे भी विचार ही मानती है।

अनुभूति विचार नहीं है, आध्यात्मिक शक्ति है। और आध्यात्मिक शक्ति,साधना से आती है।

बुद्धि की सहायता से जानकारी तो कोई भी इकट्ठी कर सकता है वैचारिक रुप में।

कुछ जानना,समझना हो तो अधिकांश लोग विचार करते मिलेंगे ।और वे क्या कर सकते हैं, आध्यात्मिक शक्ति तो है नहीं जो साधना से आती है।

साधना के लिए कहा जाय तो उनके पास समय नहीं है।

आत्मविश्वास की साधना तो ऐसी साधना है जिसकी जरूरत दैनिक जीवन में रोज पड़ती है।

आत्मविश्वास और विश्वास में फर्क समझ लेना चाहिए।

विश्वास बौद्धिक होता है।

आत्मविश्वास अगर वह सचमुच है तो उसे बौद्धिक नहीं कहा जा सकता ।वह मन-बुद्धि का खेल नहीं ।उसके लिए अनुभव का आधार चाहिए ही चाहिए।

अपने अनुभव का प्रयोग करना पड़ता है चाहे वह स्वानुभव हो या देहानुभव।

देहानुभव स्थूल है क्योंकि देह स्थुल है मगर भीतर यह सूक्ष्म से जुड़ा है।

भीतर की स्थिति बहुत प्रभावित करती है ।किसीने कटु शब्द बोले तो उसका प्रभाव पूरे शरीर पर झलकता है ।जंगल से गुजरे कोई जंगली जानवर झपटा।

जंगली जानवर छोड़िये,शहर में एक श्वान भी आक्रामक होता है तो उसके नकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं।

विज्ञान कहता है-

'जब आप अचानक डर जाते हैं तो एड्रेनालाईन आपके शरीर में तेजी से भेजा जाता है।

यह रश हृदयगति, रक्तचाप,श्वासगति बढ़ाता है।'

'आत्मविश्वास बढ़ाने में कई हार्मोन की भूमिका होती है जिनमें से प्रमुख हैं डोपामिन, सेरोटोनिन, आक्सीटोसिन,एंडोर्फिन और टेस्टोस्टेरोन।

प्रेम हार्मोन आक्सीटोसिन विश्वास और सुरक्षा की भावना बढ़ाता है।'

कोरी बौद्धिकता की जगह क्या हम प्रकृति के इन रहस्यों को जानते हैं?

जानना चाहिये। इससे स्थिर होने में मदद मिलती है। आत्मविश्वास तथा प्रेम की महत्ता, गुणवत्ता का पता चलता है।

ऐसा आदमी डरने,डराने के बजाय प्रेम तथा आत्मविश्वास को उपयोग में लाता है।

यह विज्ञान द्वारा दी हुई जानकारी है फिर भी महत्वपूर्ण है।

तब भय की जगह एड्रेनालाईन की तरफ ध्यान जायेगा,प्रेम की जगह आक्सीटोसिन की तरफ ध्यान जायेगा।

पता चलेगा प्रकृति किस तरह अपना कार्य करती है।

लेकिन यही सब कुछ नहीं है।

कृष्ण कहते हैं -

परा -अपरा,जड़-चेतन दोनों मेरी प्रकृति है।

ये प्रकृति जिसकी है वह आधार है ।वह आधार हृदय है जिसमें मूलस्रोत है ।गीता उसकी शरण में जाने के लिए कहती है।

अर्थात चित्त रुपी हम स्वयं हृदय में रहने का अभ्यास करें बजाय मन-बुद्धि में रहने की आदत बनाये रखने के।

₹मैं स्वयं हृदय में हूं₹।

(सभी लोग मूलतः हृदय में ही हैं ।सभी का गहरा सम्मान स्वयं को ही लाभान्वित करता है। इससे बचना अपना ही नुकसान करना है।)

ऐसा ध्यान,ऐसा अनुभव करने से चित्त स्वतः हृदय में अपने मूल स्थान में ठहरने लगता है।

प्रकृति देह के माध्यम से अपना काम तो करती ही है परंतु एक विशेष स्थिति होती है जिसमें अनुभूति के रूप में आध्यात्मिक शक्ति भी अपना कार्य करती है।

संदेह का कोई कारण नहीं है। खोजने पर ऐसे अनेक साधक और सिद्ध मिल जायेंगे।

नहीं तो स्वयं तो है ही -सबसे श्रेष्ठ,सदैव उपलब्ध प्रयोगशाला।

समझदार आदमी आत्मविश्वास के लिए स्वयं पर कार्य करना चाहेगा।

वह एक तरफ अंतःकरण की चित्तवृत्तियों के अनुभव को जानेगा तथा दूसरी तरफ प्रकृति के हार्मोन को भी।

दोनों एक साथ कार्य करते हैं।

यह जो नकारात्मक की जगह सकारात्मक सोचने की आदत डालने के लिए कहा जाता है यह इसीके लिए है।

भय में भरोसा करना मुश्किल है,मगर एड्रेनालाईन रश को समझने में कोई बाधा नहीं है।

इससे भयमुक्त तटस्थता आती है। आदमी ज्यादा बुद्धिमानी से सोच सकता है।

प्रकृति के कार्य को समझने से चिंता कम हो जाती है तथा अपनी ऊर्जा को स्व में स्थिर होने के कार्य में लगाया जा सकता है।

यह आत्मा का अनुभव है-स्वयं का अनुभव। स्वयं से संघर्ष अर्थात आत्मसंघर्ष,आत्मस्थिति में बाधक है।

प्रकृति के अनुभव से लडने के बजाय हम उसे समझने और सीखने के लिए उसका उपयोग करें।

एक बीमार आदमी का शरीर भी प्रज्ञा वान को काफी मदद दे सकता है।

अनुभव को साथी बनाना चाहिये। सोच-विचार व्यर्थ है।

बहिर्मुखी बुद्धि

बाहर व्यक्ति -घटना-परिस्थिति संबंधी जानकारी इकट्ठा करती रहती है।

यह सब गौण है। बाहरी घटनाओं के विश्लेषण से आदमी यंत्रवत्‌ चलता है ।स्वयं को जानने से यांत्रिकता समाप्त हो जाती है।

अपना नियंत्रण अपने हाथ में आने लगता है।

ज्यादा अच्छा होगा अगर आदमी अपने अनुभवों की तरफ ध्यान दे।

इस विषय में किया गया प्रकृति का अध्ययन अंतर्मुखी बनाता है, अध्यात्म तो अंतर्मुखी बनाता ही है।

हम सदा बाहर रहते हैं इसलिए हम जहां हैं वहां होने के महत्व का पता नहीं चलता।

लेकिन अपनी जगह में बहुत बड़ी शक्ति है।

वह जो भी है सर्वव्यापी है।

उसकी ऊर्जा अनंत है।

मुस्तफाबाद हादसे के बाद 19 घंटे तक चला राहत और बचाव कार्य, मलबा हटाने का काम अभी भी जारी...

मुस्तफाबाद में एक तीन मंजिला इमारत के गिरने से 11 लोगों की मौत हो गई। 19 घंटे तक चले बचाव अभियान में 22 लोगों को बचाया गया। पुलिस ने लापरवाही से मौत का मामला दर्ज किया है शुरुआती जांच में अवैध निर्माण को हादसे का कारण माना जा रहा है। दिल्ली सरकार ने जांच के आदेश दिए हैं और मृतकों के परिवारों को मुआवजा देने की घोषणा की है।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। मुस्तफाबाद में तीन मंजिला मकान जमीनदोज होने पर राहत बचाव कार्य 19 घंटे तक चला। 22 लोगों के अलावा वहां कोई नहीं मिला। बचाव कार्य के आखिर वक्त में मलबे के नीचे पिंजरे में दो जिंदा मुर्गे मिले।

एनडीआरएफ, दमकल व पुलिस ने बचाव कार्य बंद कर दिया। हादसे में मारे गए 11 लोगों की मौत की वजह दम घुटना, हाथ, पैर, सिर की हड्डी टूटना, अधिक खून बहना बताया गया है। दिल्ली नगर निगम गली से मलबा हटाने में जुटा हुआ है। गली 15 फुट चौड़ी। मलबा हटाने में निगम को समस्या हो रही है। निगम के बड़े डंपर गली में बड़ी मुश्किल में पहुंच रहे हैं।

सोमवार तक मलबा हटने की संभावना

उम्मीद है सोमवार शाम तक मलबा हट जाएगा। दयालपुर थाना ने लापरवाही से मौत की धारा में प्राथमिकी की है। पुलिस ने मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस ने हादसे की वजह मकान के भू-तल पर दो दुकानों को एक करने के लिए बीच की दीवार व पिलर को तोड़ना माना है। दुकान को बड़ा करके मकान मालिक तहसीन को उसे किराये पर देना था।

हादसे में एक ही परिवार के आठ लोगों की मौत

हादसे में घायल किरायेदार नबी अहमद, इनकी बेटी तनु व दूसरे किरायेदार शाहिद का इलाज जीटीबी अस्पताल में चल रहा है। दस घंटे तक मलबे के नीचे दबी रही मकान मालिक तहसीन की पत्नी जीनत को रविवार को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। हादसे का नाम आते ही वह सहम रही हैं। इस हादसे में उनके परिवार के आठ लोगों की मौत हुई है, इसके बारे में उन्हें नहीं बताया गया।

हादसे में 11 लोगों की मौत

दमकल को शुक्रवार रात 2:50 बजे शक्ति विहार दयालपुर गली नंबर एक में तीन मंजिला मकान गिरने की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही एनडीआरएफ, दमकल, पुलिस समेत कई विभाग मौके पर पहुंचे। राहत बचाव कार्य शुरू किया। एक-एक करके मलबे में दबे लोगों को बाहर निकाला गया। मलबे के नीचे दबे 11 लोगों के शव निकाले गए और 11 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया।

पिंजरे के अंदर दो जिंदा मुर्गे मिले

आखिरी शव दिन में 3:45 बजे एक बुजुर्ग का निकाला गया था। बुजुर्ग के शव के निकाले जाने के बाद साढ़े छह घंटे तक बचाव दल ने सर्च ऑपरेशन चलाया। मकान से सारा मलबा हटाया। 22 के अलावा कोई व्यक्ति नहीं मिला। मकान के भू-तल पर बनी एक दुकान के अंदर से पिंजरे के अंदर जो जिंदा मुर्गे मिले। शनिवार रात करीब 10:30 बजे टीम ने राहत बचाव कार्य रोक दिया।

दिल्ली सरकार ने दिए जांच के आदेश

दिल्ली सरकार ने उत्तर पूर्वी जिलाधिकारी अजय कुमार को हादसे की जांच करने के आदेश दिए हैं। 15 दिनों के अंदर उन्हें अपनी रिपोर्ट सीएम को सौंपनी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बाद दिल्ली सरकार ने भी हादसे के पीड़ितों को मुआवजा देने का एलान किया है। व्यस्क मृतकों को दस व मृत बच्चों को पांच लाख व गंभीर रूप से घायलों को दो लाख रुपये व जिन्हें मामूली चोट लगी है उन्हें 20 हजार रुपये दिए जाएंगे।

कांग्रेस ने मुस्तफाबाद हादसे की उच्चस्तरीय न्यायिक जांच की मांग की, कहा- मृतकों को 10-10 लाख रुपये मिलें

दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने मुस्तफाबाद हादसे में 11 लोगों की मौत पर दुख जताया और उच्चस्तरीय जांच की मांग की। उन्होंने भाजपा और आप को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि दोनों पार्टियों के पार्षदों की मिलीभगत से अनधिकृत निर्माण हो रहा है। यादव ने मृतकों के लिए अधिक मुआवजे की मांग की और कहा कि मुख्यमंत्री की जांच रिपोर्ट से काम नहीं चलेगा।

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने मुस्तफाबाद हादसे पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए इस हादसे की उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। उन्होंने 11 लोगों की मौत के लिए सीधे तौर पर भाजपा और आप को जिम्मेदार ठहराया।

'अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए'

उन्होंने कहा कि इस हृदय विदारक हादसे में जान और माल दोनों का नुकसान हुआ है। इसकी उच्चस्तरीय न्यायिक जांच होनी चाहिए। अनधिकृत निर्माण के लिए जिम्मेदार सभी अधिकारियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए ताकि भविष्य में इस तरह के दर्दनाक हादसों को रोका जा सके। उन्होंने कहा कि यह किसी से छिपा नहीं है कि दिल्ली में बन रहे मकानों के हर लिंटल पर अनाधिकृत धन उगाही करने के लिए भाजपा और आप के पार्षद लिंटल माफिया के रूप में जाने जाते हैं। यह भ्रष्टाचार नगर निगम के अधिकारियों की मिलीभगत से होता है।

यादव ने कहा कि अधिकारी भवन निर्माण नियमों की आड़ में मोटी रिश्वत मांगते हैं। यही कारण है कि यहां अनाधिकृत निर्माण बढ़ रहे हैं।

यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने हादसे की जांच के आदेश देकर और निगम कमिश्नर से जांच रिपोर्ट मांगकर मामले से अपना पल्ला झाड़ लिया है, लेकिन इतने बड़े हादसे की भरपाई इससे नहीं हो सकती।

पीएम ने की मुआवजा देने की घोषणा : प्रधानमंत्री ने मृतकों को दो-दो लाख और घायलों को 50-50 हजार रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है। यादव ने कहा कि महंगाई के हिसाब से मृतकों को 10-10 लाख और घायलों को दो-दो लाख रुपये मुआवजा दिया जाना चाहिए।

मुस्तफाबाद हादसे के बाद एक्शन: दिल्ली की 15 खतरनाक इमारतों की पहचान, JE का तबादला; एक अधिकारी बर्खास्त

पूर्वी दिल्ली में मुस्तफाबाद हादसे के बाद खतरनाक इमारतों की पहचान के लिए सर्वे शुरू हो गया है। 15 खतरनाक इमारतों की पहचान की गई है और सर्वे जारी है। निगम ने एक जेई का तबादला कर दिया है और एक को बर्खास्त कर दिया है। तीन अन्य अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। आगे इसमें तेजी आ सकती है।

नईदिल्ली। मुस्तफाबाद के दयालपुर इलाके में चार मंजिला इमारत गिरने से हुई 11 लोगों की मौत में निगमायुक्त अश्वनी कुमार की सख्ती के बाद कार्रवाई शुरू हो गई है। रविवार को जहां खतरनाक और पांच से छह मंजिल ऊंची इमारतों की पहचान का सर्वे शुरू हो गया है तो वहीं वार्ड के कनिष्ठ अभियंता(जेई) रवि कुमार सिंह का तबादला कर बिल्डिंग विभाग से हटाकर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है । वहीं, एक जेई फैजान रजा को बर्खास्त कर दिया गया है।

निगम के अनुसार सर्वे में 15 खतरनाक इमारतों की पहचान की है और सर्वे सोमवार को भी जारी रहेगा। निगम के अनुसार इन इमारतों का ढांचा ऐसा है कि वह भार सहन करने के लिए सक्षम नहीं है और जानमाल का नुकसान हो सकता है।

निष्पक्ष जांच के लिए कारण बताओ नोटिस जारी

निगम ने अपने जारी बयान में बताया कि चूंकि वर्तमान जेई रवि कुमार सिंह 28 नवंबर 2024 से ही

वार्ड में तैनात थे इसलिए उन्हें जोन से हटाकर दूसरे विंग में तैनात किया गया है और निष्पक्ष जांच के लिए उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

इसी नेहरू विहार वार्ड में मार्च 2019 से अगस्त 2021 तक तैनात एक अन्य जेई फैजान रजा को बर्खास्त इसलिए किया गया है कि वह पहले से ही कई अनुशासनात्क कार्रवाई का सामना कर चुके हैं। उन्हें ऐसे ही एक मामले में नौकरी से हटा दिया गया है।

निगम ने यह भी बताया कि बिल्डिंग विभाग में तैनात तीन और अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। उनको या तो जबरन सेवानिवृत किया जाएगा या फिर नौकरी से बर्खास्त किया जाएगा।

एक इमारत को अवैध निर्माण के चलते सील किया

वहीं, निगम ने घटना वाले इलाके में एक इमारत को अवैध निर्माण के चलते सील किया है। इसमें दो दुकानें और तीन आवसीय परिसरों को सील कर दिया है। एक अवैध निर्माण ध्वस्त करने की प्रक्रिया भी चल रही है। एमसीडी अधिकारियों के अनुसार नेहरू विहार वार्ड में सर्वे किया जा रहा है। क्योंकि यह एक घनी आबादी वाला क्षेत्र हैं। यहां पर इतनी बड़ी संख्या में अवैध निर्माण कैसे हो गया है इसमें विस्तृत जांच की आवश्यकता है।

पूरी दिल्ली में बन रही हैं पांच से छह मंजिल की इमारतें

मुस्तफाबाद की घटना के बाद नेहरू विहार इलाके में ही पांच से छह मंजिल ऊंची खतरनाक इमारतों का सर्वे किया जा रहा है। उन इमारतों की पहचान की जा रही है जिनमें भार सहने की क्षमता नहीं है लेकिन, दिल्ली में नेहरू विहार ही नहीं करावल नगर, सीलमपुर, सीमापुरी, नंदनगरी, शाहदरा, मंडावली, गांधी नगर, भजनपुरा, त्रिलोकपुरी, लक्ष्मी नगर, पांडव नगर, उत्तम नगर, बुराड़ी, किराड़ी, पालम, बवाना, नरेला, सुल्तानपुरी, मगोलपुरी में यही हाल है। जिसकी प्रमुख वजह आवासीय मांग का एजेंसियों द्वारा पूर्ति न कर पाना भी है। जितनी बड़ी संख्या में लोग दिल्ली में आते हैं उनके के लिए आवासीय व्यवस्था सरकारी तौर पर उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए अनधिकृत कॉलोनियां बस रही हैं।

भूतल पर है पार्किंग तो 17.5 मीटर ऊंची हो सकती है इमारत

दिल्ली में रिहायशी प्लाट की ऊंचाई अधिकतम 15 मीटर हो सकती है लेकिन दिल्ली में 20-22 मीटर ऊंची इमारतें आसानी से दिख जाएगी। हालांकि कुछ शर्तों में इमारत की ऊंचाई को लेकर छूट दी जाती है। इसमें भूतल पर अगर पार्किंग बनी है तो इसका लाभ संपत्ति मालिक को दिया जाता है। ऐसे में संपत्ति मालिक अपनी संपत्ति को 17.5 मीटर तक बना सकता है।

दिल्ली में मच्छरों का कहर, इस जोन में सबसे ज्यादा परेशानी; निपटने के लिए आया निगम का निर्देश

दिल्ली में निर्माण स्थलों पर मच्छरों के पनपने से एमसीडी चिंतित है। निरीक्षण में 20 प्रतिशत स्थलों पर मच्छर मिले जिसके बाद 70 के खिलाफ कार्रवाई शुरू की गई। मच्छरों को रोकने के लिए एजेंसियों को निर्देश दिए गए हैं। शाहदरा साउथ जोन में सबसे ज्यादा मामले पाए गए। निगम ने इंजीनियरिंग विभाग से मदद मांगी है। निर्माण स्थलों पर पनप रहे हैं मच्छर एक गंभीर समस्या है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में निर्माण स्थलों पर पनप रहे मच्छर एमसीडी कर्मियों के लिए परेशानी का सबब बनते जा रहे हैं। क्योंकि निर्माण स्थलों पर मच्छर पनप रहे हैं और उसके कारण मच्छर जनित बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ रहा है।

इसलिए निगम इन स्थलों का निरीक्षण कर रहा है, लेकिन निर्माण एजेंसियों या स्थलों के मालिकों को मच्छरों के प्रजनन को रोकने के लिए खुद ही इंतजाम करने चाहिए। इंतजाम न होने के कारण यह समस्या हो रही है। जिसके कारण हर साल मच्छर पनपते हैं और लोगों को प्रभावित करते हैं।

निर्माण स्थलों को लेकर निगम द्वारा चलाए गए विशेष अभियान में 20 फीसद स्थलों पर मच्छर पनपते पाए गए। हालांकि निगम ने चालान व नोटिस भेजने की कार्रवाई की है। इसमें 58 के खिलाफ कानूनी कार्रवाई और 12 के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

निगम के मुताबिक, पिछले सप्ताह सभी जोनों में 500 वर्ग मीटर या इससे अधिक के 267 निर्माण स्थलों का निरीक्षण किया गया। एमसीडी की टीम को 45 स्थलों पर मच्छर पनपते मिले। निगम को 53 स्थानों पर मच्छर मिले।

इस पर निगम ने 58 को कानूनी नोटिस भेजा है जबकि 12 के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की गई है। तीन का मौके पर ही चालान किया गया है और 13 का चालान कोर्ट के जरिए किया गया है। निगम अधिकारी ने बताया कि निर्माण स्थलों पर मच्छरों का पाया जाना चिंताजनक है। जबकि नियमानुसार निर्माण एजेंसी को मच्छरों को पनपने से रोकने के इंतजाम करने चाहिए।

इसके लिए निगम आयुक्त ने पहले ही सभी एजेंसियों को इस पर काम करने के लिए पत्र लिख दिया है। सभी एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना है कि निर्माण स्थल या कार्य स्थल मच्छरों के पनपने का जरिया न बने। अधिकारी ने बताया कि मच्छरों के पनपने के सबसे ज्यादा मामले पूर्वी दिल्ली के शाहदरा साउथ जोन में मिले हैं।

सिटी एसपी जोन में 10 में से किसी भी स्थान पर मच्छर नहीं पाए गए और सिविल लाइंस में 22 में से किसी भी स्थान पर मच्छर नहीं पाए गए। करोल बाग जोन में 16 में से सात, केशवपुरम में 29 में से पांच, नजफगढ़ में 16 में से तीन, नरेला में 18, रोहिणी में 17 में से तीन, साउथ जोन में 52 में से आठ और वेस्ट जोन में 28 निर्माण स्थलों में से आठ पर मच्छर पनपते पाए गए।

इंजीनियरिंग विभाग से मांगी मदद

निगम के जन स्वास्थ्य विभाग ने निर्माण स्थलों पर मच्छरों के पनपने के मामलों को देखते हुए इंजीनियरिंग विभाग से मदद मांगी है। जन स्वास्थ्य विभाग निर्माण एजेंसियों को इस बारे में जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। साथ ही ठेकेदारों को भी इस बारे में सचेत किया जाना चाहिए। इसी काम को देखते हुए जन स्वास्थ्य विभाग ने यह मदद मांगी है।

दिशा-निर्देशों का हो रहा है इंतजार

दिल्ली सरकार ने राजधानी दिल्ली में डेंगू को महामारी रोग अधिनियम के तहत इसे अधिसूचित रोग बनाया गया था। अधिसूचना में निर्माण स्थलों को भी दिशा-निर्देश बनाने की बात थी। अधिसूचना में कहा गया था कि कोई भी व्यक्ति जब तक किसी नए भवन में नहीं रहेगा तब तक की संबंधित निकाय से मच्छररोधी उपाय संबंधित प्रमाण पत्र न मिल जाए। इसके लिए विस्तृत दिशा निर्देश यूनिफाइड बिल्डिंग बायलाज में बनने थे। जो कि तीन साल से लंबित है।

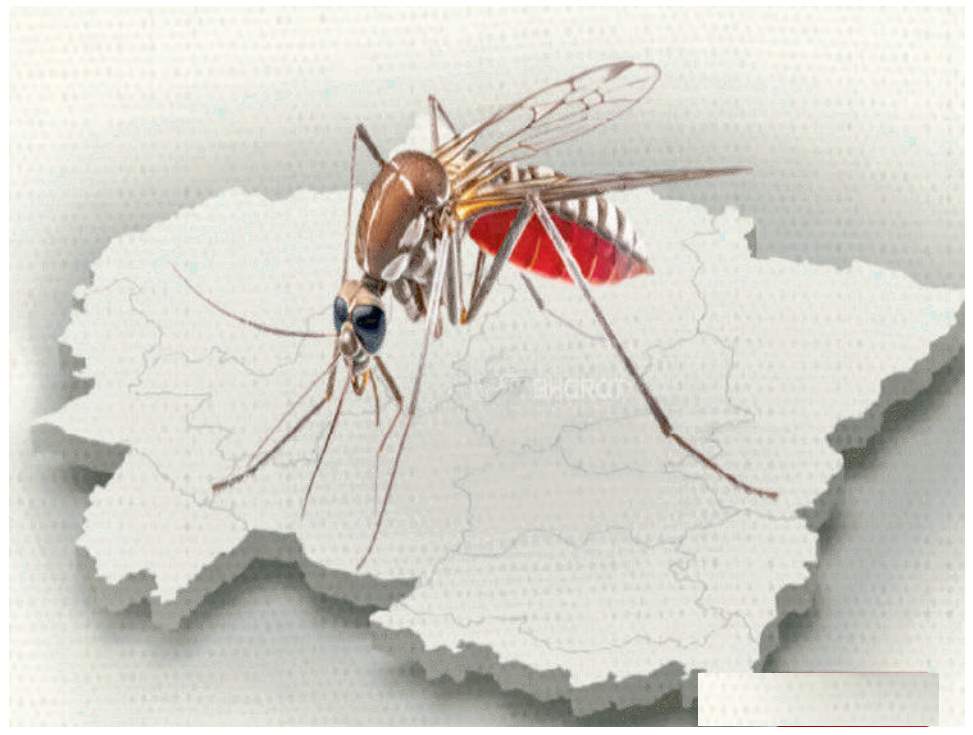

दिल्ली में रात के तापमान ने तोड़ा 3 साल का रिकॉर्ड, बढ़ता रहेगा पारा; पढ़ें IMD का अपडेट

दिल्ली में मौसम का मिजाज बदल रहा है। न्यूनतम तापमान ने तीन साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है अप्रैल 2022 के बाद सबसे गर्म रात दर्ज की गई। रविवार को न्यूनतम तापमान 26.0 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से अधिक है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल लू चलने की संभावना नहीं है लेकिन तापमान में वृद्धि जारी रह सकती है। दिल्ली का AQI मध्यम श्रेणी में है।

नई दिल्ली। राजधानी के मौसम में उतार चढ़ाव का दौर लगातार जारी है। कभी तापमान और गर्मी में वृद्धि होने लगती है तो कभी मौसम की करवट से गिरावट आने लगती है। इसी लुकाछिपी के बीच अब न्यूनतम तापमान ने तीन वर्ष का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। शनिवार (19 अप्रैल) की रात अप्रैल 2022 के बाद सबसे गर्म रही है। अभी हाल फिलहाल लू भले ही न चले, लेकिन तापमान में वृद्धि का यह दौर बना रह सकता है।

रविवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान सामान्य से 4.4 डिग्री अधिक 16.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इससे पहले अप्रैल 2022 में यह 16.2 डिग्री दर्ज किया गया था। हालांकि सर्वाधिक न्यूनतम तापमान नजफगढ़ में 17.4 डिग्री सेल्सियस रहा। रविवार को अधिकतम तापमान सामान्य से 3.0 डिग्री अधिक 39.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। सर्वाधिक अधिकतम तापमान 40.4 आयानगर में रिकॉर्ड किया गया। हवा में नमी का स्तर 71 से 35 प्रतिशत रहा।

मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि सोमवार को दिन में आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे। 10 से 20 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। न्यूनतम और अधिकतम तापमान क्रमशः 25 एवं 40 डिग्री रह सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले सप्ताह भर तक दिल्ली में लू चलने की भी कोई संभावना नहीं है। इस दौरान अधिकतम तापमान 42 डिग्री जबकि न्यूनतम 27 डिग्री तक रिकार्ड किया जा सकता है।

रविवार को दिल्ली का एक्यूआइ 200 से नीचे मध्यम श्रेणी में रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक रविवार को दिल्ली का एक्यूआइ 140 रहा। एक दिन पहले शनिवार को यह 165 था। यानी चौबीस घंटे में इसमें 25 अंकों की कमी दर्ज की गई। अगले कई दिन हवा चलने के आसार हैं। इसके चलते प्रदूषण के स्तर में सुधार भी बने रहने की संभावना है।

झुग्गियों में बसते हैं गरीबों के सपने, पुनर्वास की व्यवस्था के बगैर झुग्गियों को तोड़ना नाइंसाफी: संतोष सोनी

मनोज मणि

नई दिल्ली। अंबेडकर नगर भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष संतोष सोनी ने एक गंभीर मुद्दे को जोरदार रूप से उठाते हुए कहा कि भारत जैसे विकासशील देश में शहरीकरण तेज़ी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही झुग्गी बस्तियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है ।ये झुग्गी बस्तियाँ केवल अस्थायी निवास नहीं, बल्कि शहरी अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा हैं। यहाँ रहने वाले लोग घरों में काम करने वाले नौकर, ड्राइवर, सफाई कर्मचारी, दिहाड़ी मज़दूर, सिक्योरिटी गार्ड, और अन्य आवश्यक सेवाएं देने वाले होते हैं। ऐसे में यदि इन बस्तियों को बिना किसी पुनर्वास योजना के तोड़ा जाता है तो इसे कहीं से उचित नहीं कहा जा सकता। झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोग शहर के हर घर, कार्यालय और संस्थान की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। वे सस्ती, सुलभ और अनिवार्य श्रमशक्ति प्रदान करते हैं ।जितना कोई शहर चमकता है, उतना ही उसे चमकाने में लगे लोगों की मेहनत पसीने से भीगा होता है — जिनका घर अक्सर झुग्गियों में होता है।

सरकारी योजनाएँ अक्सर हकीकत से दूर होती हैं। जहाँ झुग्गी हटाई जाती है, वहाँ पुनर्वास दूर-दराज़ इलाकों में दिया जाता है, जिससे काम पर लौटना लगभग असंभव हो जाता है। ऐसे में मजबूरी में गरीब फिर से किसी और कोने में झुग्गी डालने को विवश होता है, और यह चक्र चलता रहता है ।बच्चों की शिक्षा पर झुग्गियाँ हटाने का सबसे निर्दोष और दर्दनाक पड़ता है ।जब किसी झुग्गी को तोड़ा जाता है, तो वहाँ रहने वाले बच्चों की पढ़ाई रुक जाती है। स्कूल छूट जाते हैं, किताबें बर्बाद हो जाती हैं, और स्थायी आवास न होने के कारण वे दोबारा स्कूल नहीं जा पाते ।सुनियोजित पुनर्वास योजना के तहत किसी भी झुग्गी को हटाने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके रहने वालों को न केवल वैकल्पिक आवास मिले, बल्कि वह उनके काम और बच्चों की शिक्षा से जुड़ा हुआ हैं। इन बच्चों का भविष्य जो एक अच्छे सपनों के साथ जुड़ा था अचानक बिखर जाता है और फिर वह बाल श्रमिक भिक्षुक या अपराध दुनिया में प्रवेश कर जाता हैं।

नोएडा एयरपोर्ट के पास घर बसाने का मौका जल्द आवासीय प्लॉट स्कीम लॉन्च करेगा यीडा

अगर आप तेजी से विकसित हो रहे ग्रेटर नोएडा में अपना आशियाना बनाने की सोच रहे हैं तो यह जानकारी आपके काम की है। दरअसल यमुना प्राधिकरण जल्द नोएडा एयरपोर्ट के पास आवासीय प्लॉट योजना लॉन्च करेगा। अभी योजना के लिए रेरा पंजीकरण की प्रक्रिया चल रही है। इसके साथ ही औद्योगिक प्लॉट योजना के लिए ब्रोशर तैयार हो रहा है।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण प्लॉट योजना निकालने में लगातार पिछड़ रहा है। नई प्लॉट आवंटन दरें तय होने के बावजूद प्राधिकरण अभी तक आवासीय और औद्योगिक प्लॉट योजना नहीं निकाल सका है। यह स्थिति तब है, जब प्राधिकरण के पास योजना के प्लॉट भी उपलब्ध हैं।

औद्योगिक प्लॉट योजना के लिए आवंटन नीति व मूल्यांकन मानक भी तय हो चुके हैं। पिछले वित्त वर्ष यमुना प्राधिकरण के लिए औद्योगिक प्लॉट आवंटन किए बगैर ही बीत गया। औद्योगिक प्लॉट आवंटन नीति व मूल्यांकन मानक का मामला शासन स्तर से हल न होने के कारण प्राधिकरण प्लॉट योजना के लिए इंतजार ही करता रह गया।

आठ सौ से अधिक प्लॉटों का आवंटन

आवासीय श्रेणी में दो प्लॉट योजना के जरिये आठ सौ से अधिक प्लॉटों का आवंटन हुआ। मार्च में हुई यीडा की 83 वीं व 84 वीं बोर्ड बैठक में औद्योगिक आवंटन नीति व मूल्यांकन मानक तय होने के बाद नए वित्त वर्ष की शुरुआत में ही प्लॉट योजना लॉन्च होने की उम्मीद थी।

प्राधिकरण ने दावा किया था कि सेक्टर 24 में बड़े औद्योगिक प्लॉट व सेक्टर 28, 29, 32, 33 में छोटे औद्योगिक प्लॉट की योजना निकालने का दावा किया था, लेकिन अभी तक योजना नहीं निकाली गई है। जबकि औद्योगिक श्रेणी में आवंटन दर में दस प्रतिशत वृद्धि के अलावा आठ हजार वर्गमीटर तक के प्लॉटों का नीलामी से व बड़े प्लॉटों का साक्षात्कार के जरिये आवंटन की नीति तय हो चुकी है।

क्यों अटकी है आवासीय प्लॉट योजना?

वहीं दो अप्रैल को आवासीय योजना लॉन्च करने का प्राधिकरण का दावा भी अभी तक पूरा नहीं हो पाया है। प्राधिकरण ने दो सौ वर्गमीटर 274 प्लॉट की योजना के लिए तैयारी थी। योजना के लिए उत्तर प्रदेश भू संपदा विनियामक प्राधिकरण में पंजीकरण की प्रक्रिया भी की गई, लेकिन पंजीकरण में देरी के कारण अभी तक आवासीय प्लॉट योजना भी अटकी हुई है।

चालू वित्त वर्ष में प्राधिकरण की राजस्व प्राप्ति के लक्ष्य को पूरा कराने का सबसे अधिक दारोमदार प्लॉट योजनाओं पर ही है। यीडा सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह का कहना है कि औद्योगिक प्लॉट योजना के लिए ब्रोशर तैयार हो रहा है। आवासीय प्लॉट योजना रेरा पंजीकरण पूरा होते ही लॉन्च की जाएगी।

पीएम के लिए तैयारियों का जायजा लेने कानपुर पहुंचे योगी आदित्यनाथ, किया मेट्रो में सफर

सुनील बाजपेई

कानपुर। आगामी 24 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित आगमन के लिए तैयारियों का जायजा लेने के इरादे से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज रविवार को कानपुर पहुंचे।

इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में स्थित नेयवली पॉवर प्लांट का भ्रमण किया। करीब 40 मिनट तक उन्होंने प्लांट में रुककर टरबाइन व कंट्रोल यूनिट का निरीक्षण कर प्लांट अधिकारियों के साथ बैठक कर जानकारी ली व दिशा निर्देश दिए। इसके बाद उनका हेलीकॉप्टर कानपुर के लिए उड़ गया।

मुख्यमंत्री का हेलीकाप्टर कानपुर के चकेरी से उड़कर करीब 12.50 पर पॉवर प्लांट में लैंड हुआ। उसके बाद उन्होंने प्लांट की यूनिटों का निरीक्षण किया। इसके बाद प्लांट के अधिकारियों के साथ बैठक कर जानकारी लेने के साथ दिशा निर्देश भी दिए। प्लांट के अधिकारियों ने बताया कि 660-660 मेगावाट की तीन यूनिटों में पहली यूनिट चालू हो चुकी है। राम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथने अधिकारियों के साथ भी बैठक करके आवश्यक कार्य निर्देश दिए।

अपने आगमन के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेट्रो का भी सफर किया। इस मौके पर उनके साथ विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ,मंत्री राकेश सचान सांसद देवेंद्र सिंह भोले, ग्रामीण जिलाध्यक्ष उपेंद्र पासवान

और जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण भी मौजूद रहे।

गौर सिटी सोसायटी के पास फर्नीचर की दुकान में लगी भीषण आग, लाखों का सामान जलकर राख

ग्रेटर नोएडा के गौर सिटी में एक फर्नीचर की दुकान में भीषण आग लग गई जिससे लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया। आग पर काबू पाने के लिए दमकल की गाड़ियां मौके पर मौजूद हैं। आग लगने के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है। आग इतनी भयंकर थी कि देखते ही देखते कुछ मिनटों में उसने फर्नीचर को भी अपने आगोश में ले लिया।

ग्रेटर नोएडा। बिसरख कोतवाली क्षेत्र स्थित गौर सिटी सोसायटी के समीप फर्नीचर की दुकान में आग लग गई। जिस समय आग लगी कामगार दुकान में काम कर रहे थे। कामगारों ने भाग कर अपनी जान बचाई। सूचना पर पहुंची दमकल की तीन गाड़ियां आग पर काबू पाने में जुटी है। आग पर अभी काबू नहीं पाया जा सका है।

आग के कारण पीड़ित दुकान मालिक को लाखों का नुकसान हुआ है। गौर सिटी 16 एवेन्यू सोसायटी के समीप मार्केट में फर्नीचर की दुकान है। जिसमें 12 बजे के करीब अचानक आग लग गई। आग इतनी भयंकर थी कि थोड़ी ही देर में उसने दुकान में रखा फर्नीचर को भी अपने आगोश में ले लिया।

भागकर दुकान से निकले लोग

जब तक कामगार कुछ समझ पाते तब तक आग तेजी से फैल गई। आग को विकराल होता देखकर कामगार भागकर दुकान से बाहर निकले। इसके बाद सूचना दमकल विभाग को दी गई। सूचना पर पहुंची दमकल की गाड़ियां आग पर काबू पाने में जुटी है।

कैसे लगी आग?

गौर सिटी गुरुद्वारा के पास फर्नीचर की दुकान में बिजली के मीटर में शॉर्ट सर्किट से आग लगी है। इसमें बड़ी लापरवाही सामने आई है। हाईटेंशन लाइन के खंभे के नीचे अवैध रूप से दुकान चल रही थी।

फर्नीचर की दुकान में लगी आग ने पास की शराब की दुकान को भी अपनी चपेट में ले लिया और लाखों की शराब जल गई। बगल के रेस्टोरेंट में आग से बचाव के लिए लोग आनन-फानन में गैस सिलेंडर लेकर बाहर भागे।

बिल्सी तहसील में संपूर्ण समाधान दिवस में सीडीओ और एसपी देहात ने सुनी जन समस्याएं

परिवहन विशेष न्यूज, बदायुं।

67 शिकायत में से केवल दो शिकायतों का मौके पर हुआ निस्तारण

तहसील में पोषण पखवाड़े के आयोजन में पहुंचे सीडीओ केशव कुमार

पांच गर्भवती महिलाओं को पोषण टोकरी वितरित की

नए शिक्षा शस्त्र में प्रवेश करने वाले पांच विद्यार्थियों को किताबें वितरित की गई

सीडीओ केशव कुमार और एसपी देहात के के सरोज ने पौधारोपण किया

दोनों अधिकारियों ने समय रहते शिकायतों के निस्तारण करने के निर्देश दिए

बिल्सी तहसील सभागार में फार्मर रजिस्ट्री को लेकर समीक्षा बैठक की

बिल्सी तहसील सभागार में आयोजित किया गया संपूर्ण समाधान दिवस

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस 21 अप्रैल 2025-लोक प्रशासन में ईमानदारी प्रतिबद्धता और निष्पक्षता के मूल्यों को याद दिलाने का दिन

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के हर देश में विशेष रूप से भारत में, चूँकि वह दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भी है, उसमें संघ और हर एक राज्य सरकार तीन स्तंभों कार्यपालिका विधायिका व न्यायपालिका के अंतर्गत काम करती है, इन तीनों स्तंभों को अपनी सेवा में ईमानदारी दक्षता का जवाबदेही पूर्ण रूप से समझ में आ गई तो भारत फिर सोने की चिड़िया बन जाएगा और भारत में 20 पेर्सेंट 40 पेर्सेंट 50 पेर्सेंट कमीशन के आरोप प्रत्यारोप सरकारों पर लगाना बंद हो जाएंगे। प्रिंट इलेक्ट्रानिक मीडिया में 19 अप्रैल 2025 को हमने देखे बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में 20 पेर्सेंट कमीशन का मुद्दा उठाया तो उसके जवाब में विधानसभा इसके दो कदम बढ़ाकर जवाब दिया गया। पिछली बार मध्य प्रदेश व कर्नाटक चुनाव में भी 40 पेर्सेंट व 50 पेर्सेंट की गूंज हुई थी इसका मतलब यह हुआ कि अगर 100 रूपए निकल रहे हैं तो काम करीब 50-60 परसेंट का हो पता है अगर सिविल सर्वेंट इस दिशा में ईमानदार और जवाब दे होगा तो परसेंट की प्रथम पूर्ण रूप से समाप्त होने की दिशा में काम होगा,इस विषय पर आज हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि भ्रष्टाचार के खिलाफ सटीक निर्णय लेने और ईमानदार सिविल सर्वेंटों को पुरस्कृत करने का दिन है, 21 अप्रैल 2025 है जो राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस है, इसमें आईपीएस आईएएस ए तथा बी श्रेणी के कर्मचारी शामिल होते हैं। इस दिन भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने व ईमानदारी ट्रांसपेरेंसी को अपनाने की प्रतिबद्धता का संकल्प लेना होगा। हमारे पीएम कई बार भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने की बात कर चुके हैं, जैसे हमारे गृहमंत्री ने माओवाद नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने 31 मार्च 2026 की डेट लाइन दे दी है, इस प्रकार इस बार सिविल सर्वेंट दिवस 21 अप्रैल 2025 को भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने की डेट लाइन देने की जरूरत है। 21 अप्रैल 2025 को भी माननीय पीएम इस दिवस पर सुबह 11 बजे सेवकों को संबोधित कर रहे हैं।चूँकि यह दिन सिविल सेवा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है इसलिए आज हम मीडिया में अपनी जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस 21 अप्रैल 2025, लोक प्रशासन में ईमानदारी प्रतिबद्धता और निष्पक्षता के मूल्यों को याद दिलाने व संकल्प लेने का दिन है।

साथियों बात अगर हम सिविल सेवा दिवस 21 अप्रैल 2025 को जानने की करें तो, राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के बारे में (1) भारत में, राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस हर वर्ष 21 अप्रैल को सिविल सेवकों द्वारा राष्ट्र को दी गई अमूल्य सेवाओं के सम्मान में मनाया जाता है। (2) यह तारीख 1947 में दिल्ली के मेटकाफ हाउस में आईएएस के प्रथम बैच को सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा दिए गए प्रसिद्ध संबोधन की याद दिलाती है। (3) इस भाषण में उन्होंने सिविल सेवकों को भारत का इस्पात ढांचा बताया, वही गुण जो राष्ट्र को एकजुट और अक्षुण्ण बनाए रखता है। (4) यह सिविल सेवकों के लिए अपने कर्तव्यों पर चिंतन करने का दिन है, जो जनता की सेवा करने के उनके दायित्व को नवीनीकृत करता है। (5) इस अवसर पर जहां शासन में उत्कृष्टता का सम्मान किया जाता है, वहीं शासन में नए और प्रभावी कार्य के लिए लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। (6) इस प्रकार राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस न केवल सिविल सेवकों को सलाम करने का एक अवसर है, बल्कि यह हमें ईमानदारी, प्रतिबद्धता और निष्पक्षता के मूल मूल्यों की भी याद दिलाता है, जो भारत की सिविल सेवाओं की भावना का गठन करते हैं। राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (1) राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस की पहली वर्षगांठ 21 अप्रैल को है, और इसकी शुरुआत 1947 में हुई थी, जब सरदारवल्लभ भाई पटेल भारत के पहले गृह मंत्री बने और उन्होंने नई दिल्ली के मेटकाफ हाउस में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारियों के पहले कैडर को कुशलता पूर्वक नियुक्त किया।(2) पटेल के उत्साहवर्धक भाषण में सिविल सेवकों को स्वतंत्रता के बाद देश की एकता, स्थिरता और प्रभावी शासन की जिम्मेदारी निभाने वाला बताया गया। (3) सिविल सेवकों को भारत का ₹स्टील फ्रेम₹ कहा गया, जिसने एक नव स्वतंत्र राष्ट्र की संरचना को मजबूत करने में सिविल सेवा की भूमिका पर जोर दिया। (4) प्रशासनिक इतिहास के इतिहास में अतीत के लिए पूर्ण महत्व के लिए, भारत सरकार ने घोषणा की कि अब से और 2006 से, 21 अप्रैल को राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के रूप में जाना और मनाया जाएगा। दरअसल, उस समय से, देश भर में सिविल सेवकों द्वारा किए गए हर योगदान को स्वीकार करने के लिए हर साल इस अवसर को मनाया जाता है।(5) इस प्रकार यह दिन उनके योगदान को सम्मानित करने, सर्वोत्तम प्रथाओं की ओर ध्यान आकर्षित करने तथा नागरिकों को सेवा प्रदान करने में उत्कृष्टता लाने के लिए उन्हें प्रेरित करने का एक मंच बन गया है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के उद्देश्यों की करें तो, (1) मुख्य रूप से, राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस का लक्ष्य पूरे भारत में सिविल सेवकों के प्रदर्शन मानकों को मान्यता देना, प्रेरित करना और उन्नत करना है। (2) हर साल 21 अप्रैल को यह दिन उनसिविल सेवकों को सम्मानित करने का दिन है जो सरकारीनीतियों और उचित प्रशासन के अनुप्रयोग को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं; सिविल सेवक समर्पण, ईमानदारी और अथक सेवा के लोग हैं। (3) इस उत्सव के पीछे की भावना सिविल सेवकों को जनता के प्रति अपनी सेवा में ईमानदारी, दक्षता और जवाबदेही अपनाने के लिए प्रेरित करना है। (4) यह दिन सिविल सेवकों को अपनी जिम्मेदारियों और अनुभवों पर विचार करने तथा अन्यत्र अपनाई गई नवीन प्रथाओं से सीखे गए सबक का आदान-प्रदान करने का अवसर भी देता है। (5) लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार इस क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हैं, ताकि अन्य लोग भी ऐसी ही उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रेरित हो सकें। (6) फोकस का दूसरा क्षेत्र, प्रशासन की नागरिक-उत्तरदायी भावना के लिए शासन में नवाचारों को निरंतर सुधारना और बढ़ावा देना है, जो बदलते देश की मांगों पर प्रतिक्रिया दे सके।

साथियों बात अगर हम राष्ट्र में सिविल सेवाओं की भूमिका वह चुनौतियों की करें तो, राष्ट्र निर्माण में सिविल सेवाओं की भूमिका--(1) सिविल सेवा को राष्ट्र निर्माण की इमारत का मुकुट-राष्ट्रीय प्रशासनिक प्रणाली की रीढ़ कहा गया है। (2) भारत में, सिविल सेवक इस विशाल देश के विशाल विस्तार में सरकारी नीति कार्यान्वयन और कानून-व्यवस्था के संबंध में सार्वजनिक सेवाओं के प्रावधान को लोकप्रिय बनाने का कार्य करते हैं। (3) वे सत्ता और राजनीतिक शासन की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार हैं, साथ ही प्रभावी प्रशासन के लिए राजनीतिक उथल-पुथल के बीच स्थिरता और निश्चितता लाने के लिए भी जिम्मेदार हैं। (4) वे विकास परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें लागू करने, संसाधन प्रबंधन और जमीनी स्तर पर लोगों की जरूरतों का ख्याल रखने में शामिल हो सकते हैं। सिविल सेवक आबादी और सरकार के बीच एक संचार लाइन भी बनाए रखते हैं ताकि कल्याणकारी योजनाएं अपने सही लाभार्थियों तक पहुंच सकें। (5) इसलिए, आपदाओं और विपत्तियों के दौरान, वे सभी राहत और पुनर्वास गतिविधियों के लिए अग्रिम पंक्ति के प्रत्युत्तरकर्ता बन जाते हैं। (6) निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और सम्मान-प्रतिबद्धता नागरिक संस्थाओं को ताकत देती है जो सुशासन सुनिश्चित करती हैं। (7) इस प्रकार वे राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सिविल सेवकों के समक्ष चुनौतियाँ---(1) भारत में सिविल सेवकों को, हर जगह की तरह, अपने कर्तव्यों के निष्पादन में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जो कि ज्यादातर मांग और जटिल परिस्थितियों की विशेषता होती है। नौकरशाही की लालफीताशाही चुनौतियों में सबसे ऊपर है जब वे निर्णय लेने की गति को धीमा कर देते हैं, जिससे प्रभावी सेवा वितरण में बाधा आती है। राजनीतिक दबाव और हस्तक्षेप कभी-कभी अन्य चुनौतियाँ होती हैं जिनका सामना सिविल सेवक तब करते हैं जब वे निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से कार्य करने में असमर्थ होते हैं।(2) सिविल सेवक विभिन्न परिस्थितियों में काम करते हैं जैसेसंसाधनों और बुनियादी ढांचे की कमी, खासकर ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में। ऐसे सिविल सेवकों के लिए वास्तविकता नीतियों और कार्यक्रमों की सीमा से और भी जटिल हो सकती है जिन्हें उन्हें काफी कुशलता से लागू करना होता है। भार और तनाव प्रमुख मुद्दे हैं जिनके तहत सिविल सेवक काम करते हैं क्योंकि उन्हें प्रशासन से लेकर संकट प्रबंधन तक कई काम संभालने होते हैं।(3) इसके अलावा, लोगों की जागरूकता और प्रौद्योगिकी तक समान पहुंच में वृद्धि के साथ, नागरिक पहले से किए गए वादों से कहीं अधिक की अपेक्षा करते हैं- उनकी मांगें अब पारदर्शिता, जवाबदेही और सेवा वितरण की गति से संबंधित भविष्य की हैं। इससे दबाव भी बढ़ता है क्योंकि व्यक्ति को विकसित हो रही प्रौद्योगिकी और कौशल के संदर्भ में खुद को अपडेट करते रहना पड़ता है। (4) इन कठिनाइयों के बावजूद, सच्चे सिविल सेवकों ने बहुत समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा जारी रखी है, तथा अक्सर लोक कल्याण और सुशासन के उत्थान के लिए अपने कर्तव्य से भी अधिक कार्य

साथियों बात अगर हम सिविल सेवकों की प्रतिबद्धता की करें तो,भारत में सिविल सेवकों ने अपनी प्रतिबद्धता और सेवा प्रदान की, जिसे 21 अप्रैल को मनाए गए राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस पर स्मरण किया जाता है। यह दिन सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा 1947 में पहले आईएएस अधिकारियों के प्रेरण पाठ्यक्रम में दिए गए प्रेरक भाषण की याद दिलाता है, जहाँ उन्होंने उन्हें कुशल प्रशासन और सार्वजनिक सेवा के माध्यम से शासन और राष्ट्र निर्माण की रीढ़ के रूप में देखा था। राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस 2025 राष्ट्र के विकास और प्रगति पर सिविल सेवकों के प्रभाव की याद दिलाता है। यह उनके समर्पण को सलाम करता है, शासन में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है, और ईमानदारी और जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देता है। यह दिन सार्वजनिक सेवा में गर्व को बढ़ावा देता है और राष्ट्र के प्रशासन को मजबूत करता है।आगे बढ़ने का रास्ता राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस 2025 का भविष्य नवाचार, पारदर्शिता और नागरिक-केंद्रित शासन पर निर्भर करता है। प्रशिक्षण के अवसरों में वृद्धि, आईसीटी को एकीकृत करना और जवाबदेही सुनिश्चित करना सिविल सेवकों को जनता की लगातार बदलती मांगों के प्रति अधिक कुशलता से अनुकूल होने और एक उत्तरदायी और प्रगतिशील प्रशासनिक प्रणाली के स्तंभ के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत करने में सक्षम बनाएगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस 21 अप्रैल 2025-लोक प्रशासन में ईमानदारी प्रतिबद्धता और निष्पक्षता के मूल्यों को याद दिलाने का दिन।सिविल सर्वेंट को भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने का संकल्प राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस पर लेना ज़रूरी सिविल सेवकों को जनता के प्रति अपनी सेवा में ईमानदारी दक्षता और जवाबदेही पूर्ण रूप से समझ में आ गई, तो भारत फिर सोने की चिड़िया बनेगा।

हुंडई आई10 के बेस वेरिएंट को है घर लाना, एक लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद जाएगी कितनी ईएमआई, पढ़ें खबर

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस योजना हुंडई इंडिया की ओर से हैचबैक कार सेगमेंट में Hyundai i10 को ऑफर किया जाता है। इसके बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो सिर्फ एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर बजट सेगमेंट की हैचबैक कार को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। हुंडई की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सबसे सस्ती हैचबैक कार के तौर पर Hyundai i10 को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इसे खरीदने का मन बना रहे हैं तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai i10 Price

हुंडई मोटर्स की ओर से हैचबैक कार i10 के बेस वेरिएंट को 5.98 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसे दिल्ली में खरीदने पर ऑन रोड कीमत करीब 6.80 लाख रुपये हो जाती है। इस कीमत में 5.98 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के अलावा करीब 48 हजार रुपये आरटीओ और इंश्योरेंस के करीब 34 हजार रुपये देने होंगे।

एक लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Hyunddai की इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में एक लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 5.80 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 5.80 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 9337 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 5.80 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 9337 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप हैचबैक कार Hyundai i10 के लिए करीब 2.03 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आप कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 8.84 लाख रुपये देंगे।

किनसे होगा मुकाबला

हुंडई मोटर्स ओर से i10 को एंट्री लेवल हैचबैक कार सेगमेंट में बिक्री के लिए देश भर में उपलब्ध करवाया जाता है। इसे बेहद कम कीमत पर ऑफर किया जाता है। ऐसे में इसका सीधा मुकाबला Maruti Wagon R, Maruti Celerio, Maruti S Presso, Renault Kwid जैसी हैचबैक कारों के साथ होता है। साथ ही कई एंट्री लेवल एसयूवी और प्रीमियम हैचबैक कारों से भी इसे चुनौती मिलती है।

आ गया मारुति सुजुकी स्विफ्ट का नया अवतार, एसयूवी जैसी खासियत के साथ आई नजर लेकिन खरीद नहीं पाएंगे आप, जानें क्या है कारण

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली हैचबैक कारों में से एक Maruti Suzuki Swift है। इस गाड़ी को कई देशों में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। हाल में ही इसे ऐसे फीचर के साथ ऑफर किया गया है। जिसे सामान्य तौर पर एसयूवी में दिया जाता है। यह फीचर क्या है और किस देश में इसे ऑफर किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में लोगों को एसयूवी के साथ ही हैचबैक कारों को भी चलाना काफी पसंद है। प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से हैचबैक सेगमेंट में Maruti Suzuki Swift की बिक्री की जाती है। सोशल मीडिया के मुताबिक सुजुकी ने अपनी इस गाड़ी को ऐसे खास फीचर के साथ एक देश में ऑफर किया है। जिस फीचर के साथ आमतौर पर एसयूवी को ऑफर किया जाता है। यह फीचर कौन सा है और किस देश में इसे पेश किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

किस फीचर के साथ आई Suzuki Swift

सुजुकी स्विफ्ट को हाल में ही एक खास फीचर के साथ ऑफर किया गया है। यह फीचर ऑफ रोडिंग की तरह काम करता है। निर्माता की ओर से इसे All Grip FX फीचर के साथ स्विफ्ट को पेश किया गया है। यह फीचर कुछ हद तक 4X4 जैसा ही है और ऑफ रोडिंग के समय यह काफी काम आता है।

किस देश में हुई पेश

सुजुकी की ओर से स्विफ्ट को इस फीचर के साथ भारत में नहीं ऑफर किया गया है। बल्कि इसे यूरोप के देश नीदरलैंड्स में पेश किया गया है। नीदरलैंड्स सुजुकी के सोशल मीडिया पेज पर इसकी फोटो शेयर की गई हैं। जिसके साथ ऑफ रोड को लिखा गया है।

मिले ये अपडेट्स

नए फीचर के साथ ही नीदरलैंड्स में पेश की गई नई स्विफ्ट के बंपर से फॉग लैंप का विकल्प ही हटा दिया गया है। इसके अलावा इसमें सामान रखने के लिए रूफ पर रैक भी लगाया गया है। नई स्विफ्ट के फ्रंट में नंबर प्लेट के नीचे एक लाइट बार भी दिया गया है, जिससे रात के समय कार चलाते हुए ज्यादा बेहतर रोशनी मिल पाए। इस गाड़ी को खास तौर पर पहाड़ों और बर्फ के बीच चलाने के लिए तैयार किया गया है। रूफ पर ही रैक में एक स्पेयर टायर को भी दिया गया है।

कितना दमदार इंजन

सुजुकी की ओर से इस गाड़ी को 1.2 लीटर की क्षमता के नए जेड सीरीज इंजन के साथ ही ऑफर किया गया है। जिसमें नेचुरल एस्पिरेटिड के साथ ही हाइब्रिड तकनीक का विकल्प भी मिलता है। इसके साथ 5स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन को दिया गया है। इंजन से 82 बीएचपी की पावर मिलती है।

कितनी है कीमत

नीदरलैंड्स में सुजुकी स्विफ्ट की कीमत 22299 यूरो से शुरू होती है जो भारतीय रुपये में करीब 21.65 लाख रुपये के आस-पास होती है। इसके ऑल ग्रिप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 28449 यूरो के आस-पास है जो भारतीय रुपये में करीब 27 से 28 लाख रुपये के बीच है।

किआ इंजन चोरी मामले में पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 9 आरोपी गिरफ्तार, संगठित रैकेट के होने का शक

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के श्री सत्य साई जिले में स्थित किया मोटर्स के प्लांट से 900 ऑटोमोटिव इंजन चोरी होने के मामले में पुलिस ने अब तक 9 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें से अधिकतर आरोपी तमिलनाडु के रहने वाले हैं, जबकि दो विदेशी नागरिक भी शामिल हैं जो पहले किया मोटर्स में काम कर चुके हैं। कोर्ट ने सभी आरोपियों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

देशभर में बेचे गए चोरी के इंजन

पुलिस जांच में सामने आया है कि ये इंजन देश के कई बड़े शहरों जैसे मेरठ, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, बेंगलुरु और मदुरै में बेचे गए। पुलिस का दावा है कि इस पूरे नेटवर्क में करीब 30 लोग शामिल हो सकते हैं और कई अब भी फरार हैं। पुलिस का मानना है कि यह अब तक का सबसे बड़ा संगठित ऑटोमोबाइल चोरी रैकेट हो सकता है।

प्लांट की खामियों का उठाया फायदा

पुलिस ने पीटीआई को बताया कि चोरी की इस वारदात को अंजाम देने के लिए आरोपियों ने किआ प्लांट की लॉजिस्टिक व्यवस्था की कमजोरियों का फायदा उठाया। प्लांट में मुख्य फैक्ट्री के अलावा एक सब-असेंबली यूनिट और एक खुला यार्ड है, जहां वाहनों को ट्रांसपोर्ट के लिए खड़ा किया जाता है। चोरी हुए इंजन प्लांट के पिछले हिस्से में बने स्क्रैप डंपिंग रास्ते से बाहर निकाले गए। पुलिस को शक है कि इस पूरी साजिश में अंदरूनी मदद भी मिली है।

कई बड़े चेहरे हो सकते हैं बेनकाब

फिलहाल पुलिस इस पूरे रैकेट के मास्टरमाइंड्स की तलाश में जुटी है। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि कंपनी के ऑडिट और रिकॉर्ड्स में कोई गड़बड़ी तो नहीं की गई थी। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों की जानकारी गोपनीय रखी जा रही है ताकि जांच प्रभावित न हो। अधिकारियों का कहना है कि आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां हो सकती हैं, जिससे देश के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल चोरी नेटवर्क का पर्दाफाश हो सकता है।

मारुति सुजुकी इग्निस के बेस वेरिएंट को एक लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद ले आएं घर, जाएगी इतनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस योजना मारुति सुजुकी की ओर से हैचबैक के तौर पर Maruti Ignis को बाजार में ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से नेक्सा डीलरशिप के जरिए ऑफर की जाने वाली Maruti Ignis को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को घर लाने का मन बना रहे हैं तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Ignis Price

Maruti की ओर से Ignis को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। कंपनी इस हैचबैक के बेस वेरिएंट को 5 .85 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 5.85 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 50 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 529 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। साथ ही 850 रुपये Fastag के भी देने होंगे। इसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 6.65 लाख रुपये हो जाती है।

एक लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Maruti Ignis के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में एक लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 5.65 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 5.65 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 9096 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 5.65 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 9096 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Ignis के बेस वेरिएंट के लिए करीब 1.98 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 8.64 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti Suzuki की ओर से Ignis को हैचबैक सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Alto K10, Maruti Celerio, Maruti Wagon R, Tata Tiago, Hyundai i10 के साथ होता है।

करवानी है इलेक्ट्रिक कार की सर्विस, हमेशा रखें इन बातों का ध्यान, नहीं तो हो जाएंगे परेशान

परिवहन विशेष न्यूज

इलेक्ट्रिक कार सर्विसिंग भारत में लगातार Electric Car की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। सामान्य ICE कारों के मुकाबले Electric Car की मांग में जिस तरह बढ़ोतरी हो रही है उसी तरह इसकी सर्विस की जानकारी भी लोगों के लिए काफी जरूरी है। सर्विस के समय लापरवाही बरती जाए तो फिर परेशानी भी हो सकती है। सर्विस के समय किन बातों का ध्यान रखना होता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में जितनी संख्या में पेट्रोल और डीजल वाली कारों की मांग रहती है। उसी तरह अब Electric Car की मांग में भी बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक सामान्य कारों की सर्विस की तो सभी को जानकारी होती है। लेकिन इलेक्ट्रिक कारों की सर्विस को लेकर अभी भी कम लोगों को ही जानकारी होती है। Electric Car की Service के समय पर किन चीजों पर खास ध्यान देने की जरूरत होती है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं।

Electric Car की सर्विस में न करें देरी

वैसे तो हर तरह की कार की सर्विस को समय पर ही करवाना बेहतर होता है। लेकिन आप इलेक्ट्रिक कार का उपयोग करते हैं तो उसकी सर्विस भी हमेशा समय पर करवानी चाहिए। इस तरह की आदत बनाने से कई जरूरी पार्ट्स में आने वाली परेशानी को दूर रखा जा सकता है।

सॉफ्टवेयर होता है अपडेट

इलेक्ट्रिक कारों की सर्विस के समय सर्विस सेंटर पर इनके सॉफ्टवेयर को भी अपडेट किया जाता है। ऐसा इसलिए भी किया जाता है क्योंकि सॉफ्टवेयर अपडेट के साथ गाड़ी की परफॉर्मेंस से लेकर रेंज तक को बढ़ाया जा सकता है। कुछ नए फीचर्स को भी अपडेट में दिया जाता है। इसलिए अगर आपकी गाड़ी के लिए कोई अपडेट आया हो तो उसे सर्विस के समय चेक करवाना चाहिए।

बैटरी की जांच भी जरूरी

इलेक्ट्रिक कार को सर्विस के लिए जब भी लेकर जाएं, तो उस समय कार की बैटरी की जांच भी करवाएं। इससे आपको जानकारी मिलती है कि आपकी कार में लगी बैटरी की हेल्थ कितनी बेहतर है।

इन चीजों की भी करें चेकिंग

इलेक्ट्रिक कार में भले ही इंजन न हो, लेकिन कई कारों में कूलेंट के जरिए बैटरी के तापमान को सामान्य बनाया जाता है। ऐसे में जब भी सर्विस करवाएं तो हमेशा कूलेंट को भी चेक करवाएं। अगर जरूरत हो तो कूलेंट बदलें या फिर उसे टॉप-अप करवाएं। इससे बैटरी के तापमान को सामान्य बनाए रखने में मदद मिलती है।

सेटेलाइट आधारित टोल सिस्टम पर सरकार ने दी सफाई, एक मई से शुरू करने पर नहीं हुआ फैसला

परिवहन विशेष न्यूज

उपग्रह टोल प्रणाली सेटेलाइट आधारित टोल सिस्टम पर कई मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि एक मई 2025 से इसकी शुरुआत की जाएगी। लेकिन इस मामले पर केंद्र सरकार की ओर से हाल में ही सफाई दी गई है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से इस बारे में क्या जानकारी दी गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में सेटेलाइट आधारित टोल सिस्टम को लेकर कई तरह की बातें सामने आ रही हैं। जिसे लेकर लोगों के मन में भी संशय बना हुआ है। कई मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि एक मई 2025 से नए सिस्टम के साथ टोल संग्रह शुरू कर दिया जाएगा। इस पर केंद्र सरकार की ओर से क्या जानकारी दी गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

केंद्र सरकार ने दी जानकारी

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय और एनएचएआई की ओर से जानकारी दी गई है कि एक मई 2025 से सेटेलाइट आधारित टोल सिस्टम को शुरू करने पर कोई फैसला नहीं लिया गया है। जिससे यह साफ हो गया है कि एक मई 2025 से टोल का नया सिस्टम शुरू नहीं होगा।

लागू होगी एएनपीआर-फास्टैग आधारित टोल प्रणाली

इसके साथ ही सरकार की ओर से यह भी जानकारी दी गई है टोल प्लाजा के जरिए वाहनों की बिना देरी और बिना परेशानी आवाजाही को सक्षम बनाने के साथ ही यात्रा के समय को कम करने के लिए चुनिंदा टोल प्लाजा पर एएनपीआर-फास्टैग आधारित बाधा-रहित टोलिंग प्रणाली को लागू किया जाएगा।

किस तकनीक से होगा काम

सरकार की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नई टोलिंग प्रणाली में ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन तकनीक दी जाएगी। जो वाहनों की नंबर प्लेट पढ़कर उनकी पहचान करेगी। जिसके बाद फास्टैग सिस्टम आरएफआईडी के उपयोग करने के साथ उच्च क्षमता वाले एएनपीआर कैमरों और फास्टैग रीडर्स के जरिए उनकी पहचान के आधार पर टोल प्लाजा पर रुकने की जरूरत के बिना चार्ज किया जाएगा।

निलंबित भी हो सकता है फास्टैग

जानकारी के मुताबिक अगर कोई वाहन इन नियमों का सही तरह से पालन नहीं करता है तो उल्लंघन करने वालों को ई-नोटिस भेजे जाएंगे। जिनका भुगतान नहीं किया जाएगा तो फास्टैग को निलंबित भी किया जा सकता है। इसके साथ ही वाहन से संबंधित दंड भी लगाया जा सकता है।

नए सिस्टम के लिए बोली आमंत्रित की गई

एनएचएआई की ओर से एएनपीआर फास्टैग आधारित बेरियरलैस टोल सिस्टम के लिए बोलियां आमंत्रित की हैं। जिसे चुनिंदा टोल प्लाजा पर लगाया जाएगा। जिसके बाद इसका प्रदर्शन और दक्षता की जांच होगी और फिर देशभर में इसे लागू करने पर फैसला किया जाएगा।

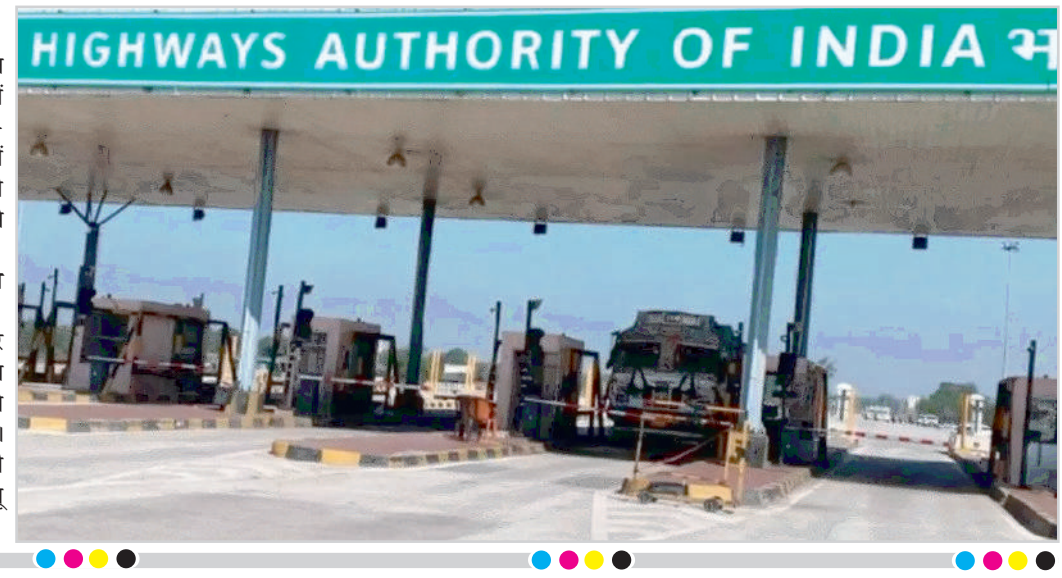

यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका

विजय गर्ग

क यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानें, सिविल सेवा परीक्षा में उम्मीदवारों को सफल होने में मदद करने के लिए संरचित शिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और प्रमुख संसाधनों की पेशकश करें।

यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिकाः यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) परीक्षा भारत में इच्छुक सिविल सेवकों के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं में से एक है। व्यापक पाठ्यक्रम, विस्तृत परीक्षा पैटर्न और उच्च प्रतियोगिता उम्मीदवारों के लिए सफल होने के लिए एक रणनीतिक और सुव्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक बनाती है। यह वह जगह है जहां यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। कोचिंग संस्थान मार्गदर्शन, संरचित योजनाओं और संसाधनों की पेशकश करते हैं जो परीक्षा की तैयारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस सूचनात्मक गाइड में, हम यूपीएससी कोचिंग के लाभों का अवलोकन करेंगे, समझेंगे कि आईएएस के लिए कोचिंग की क्या भूमिका है, और बहुचर्चित प्रश्न पर चर्चा करेंगे, क्या यूपीएससी की तैयारी के लिए कोचिंग आवश्यक है?

यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका यूपीएससी उम्मीदवारों की तैयारी को आकार देने में कोचिंग संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थान उम्मीदवारों के कच्चे ज्ञान के बीच व्यवस्थित दृष्टिकोण के लिए एक पुल के रूप में काम करते हैं जो जटिल यूपीएससी पाठ्यक्रम से निपटने के लिए आवश्यक है। ये संस्थान वर्तमान मामलों के अपडेट से लेकर परीक्षा रणनीतियों तक एक समग्र ढांचा प्रदान करते हैं, जो उम्मीदवारों को व्यापक सामग्री के माध्यम से नेविगेट करने में मदद करता है।

यूपीएससी ऑनलाइन कोर्स के लिए अभी दाखिला लें यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

संरचित शिक्षण दृष्टिकोणः यूपीएससी कोचिंग संस्थान एक संरचित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जो विशेष रूप से पाठ्यक्रम के हर पहलू को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह हर उम्मीदवार को ट्रैक पर रहने में मदद करता है, जिससे उन्हें अनावश्यक विषयों पर समय बर्बाद करने से रोका जा सके। विशेषज्ञ मार्गदर्शनः अनुभवी संकाय तक पहुंच के साथ, जिन्हें परीक्षा की आवश्यकताओं की पूरी समझ है। ये अनुभवी संकाय मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, टिप्स साझा करते हैं, और छात्रों को प्रभावी ढंग से उत्तर लिखने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन करते हैं, जो मुख्य परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। नियमित मूल्यांकनः नियमित परीक्षण, मॉक परीक्षा और संस्थानों में आयोजित अभ्यास सत्र उम्मीदवारों को उनकी प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं। ये आकलन न केवल ज्ञान का परीक्षण करते हैं बल्कि समय प्रबंधन कौशल को भी बढ़ाते हैं, जो वास्तविक परीक्षा के दौरान आवश्यक हैं। अध्ययन सामग्रीः कई कोचिंग सेंटर संक्षिप्त और अद्यतित अध्ययन सामग्री प्रदान करते हैं। ये नोट्स और किताबें व्यापक शोध के बाद तैयार की जाती हैं और परीक्षा के प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए क्यूरेट की जाती हैं। पीयर लर्निंगः एक कोचिंग संस्थान में पर्यावरण अक्सर स्वस्थ प्रतियोगिता और सहकर्मी सीखने को बढ़ावा देता है। साथी उम्मीदवारों के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा करने से संदेह को स्पष्ट करने, ज्ञान बनाने और विभिन्न दृष्टिकोणों को प्राप्त करने में मदद मिलती है। वैकल्पिक विषयों पर मार्गदर्शनः एक वैकल्पिक विषय चुनना प्रत्येक यूपीएससी आकांक्षी के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय है। कोचिंग संस्थान वैकल्पिक विषयों के चयन और तैयारी में विस्तृत और एक-से-एक मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करते हैं, जो सफलता में एक निर्णायक कारक हो सकता है। यूपीएससी की तैयारी के लिए कोचिंग की आवश्यकता यूपीएससी के उम्मीदवारों के बीच लगातार सवाल है, रक्या यूपीएससी क्रैक करने के लिए कोचिंग जरूरी है इस प्रश्न का उत्तर एक सरल हां या नहीं नहीं है, क्योंकि यह पूरी तरह से और काफी हद तक एक व्यक्ति की सीखने की शैली, अनुशासन और संसाधनों पर निर्भर करता है।

स्व-तैयारी बनाम कोचिंगः कई पूर्व उम्मीदवारों ने स्व-अध्ययन द्वारा यूपीएससी परीक्षा को सफलतापूर्वक मंजूरी दे दी है। हालांकि, जो लोग एक अनुशासित दिनचर्या को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण पाते हैं या इस बारे में भ्रमित होते हैं कि कहां से शुरू करना है, विशेष रूप से कोचिंग से लाभ हो सकता है। कोचिंग संस्थानों द्वारा प्रदान किया गया संरचित मार्गदर्शन स्पष्टता प्रदान करके समय और प्रयास बचा सकता है। सही दिशा में मार्गदर्शनः इच्छुक उम्मीदवारों के लिए जो परीक्षा प्रक्रिया में नए हैं या बड़े पैमाने पर पाठ्यक्रम से अभिभूत महसूस करते हैं, कोचिंग संस्थान सही दिशा प्रदान कर सकते हैं। वे जटिल विषयों को समझने योग्य टुकड़ों में तोड़ने में मदद करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उम्मीदवार अपनी तैयारी यात्रा के दौरान प्रेरित रहें। जबकि यूपीएससी कोचिंग संस्थान मदद कर सकते हैं, यह याद रखना आवश्यक है कि कोचिंग एक जादू का समाधान नहीं है। यूपीएससी में सफलता औपचारिक कोचिंग के साथ या बिना कड़ी मेहनत, दृढ़ता और आत्म-अध्ययन पर निर्भर करती है।

आईएएस प्रीप्रेशन के लिए कोचिंग की भूमिका आईएएस के लिए कोचिंग की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें कई चरण शामिल हैं, प्रत्येक परीक्षण विभिन्न कौशल सेट- प्रीलिम्स (वस्तुनिष्ठ प्रश्न), मेन्स (वर्णनात्मक उत्तर), और व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार)। कोचिंग संस्थान हर चरण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जो अकेले आत्म-अध्ययन के माध्यम से प्राप्त करना संभव नहीं हो सकता है।

प्रारंभिक रणनीतिः कोचिंग संस्थान प्रीलिम्स के लिए शॉर्टकट तकनीक, क्विज़ और मॉक टेस्ट प्रदान करते हैं। बहुविकल्पीय प्रश्नों से निपटने और नकारात्मक चिह्नों से बचने के तरीके पर प्रशिक्षण प्रदान करके। मेन्स तैयारीः मेन्स परीक्षा के लिए, लेखन अभ्यास महत्वपूर्ण है। कोचिंग संस्थान उम्मीदवारों को उत्तर की संरचना करने, प्रभावी ढंग से समय का प्रबंधन करने और स्पष्ट रूप से जानकारी प्रस्तुत करने के बारे में मार्गदर्शन करते हैं, जो उनकी सामग्री पर प्रकाश डालता है और उम्मीदवार अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। साक्षात्कार मार्गदर्शनः कोचिंग सेंटर उम्मीदवारों को व्यक्तित्व परीक्षण की तैयारी करने में भी मदद करते हैं। मॉक इंटरव्यू, करंट अफेयर्स डिस्कशन और विशेषज्ञों से फीडबैक आयोजित किया जाता है जो अंतिम चरण में उम्मीदवार के प्रदर्शन में काफी सुधार करता है। पीडब्लू स्टोर से यूपीएससी सीएसई बुक्स देखें

यूपीएससी कोचिंग क्लासेस ज्वाइन करने के फायदे यूपीएससी कोचिंग कक्षाओं में शामिल होने के लाभ परे हैं जो यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका को बढ़ाता है। कोचिंग संस्थान एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं जहां उम्मीदवार संसाधनों, मार्गदर्शन और नैतिक समर्थन तक पहुंच सकते हैं, जो उनके आत्मविश्वास और तत्परता को बहुत बढ़ा सकता है।

मेंटरशिपः एक संरक्षक इच्छुक उम्मीदवारों को सही दिशा में मदद और मार्गदर्शन कर सकता है, जो अंततः उन्हें ताकत पर ध्यान केंद्रित करने और कमजोरियों पर काम करने में मदद करेगा। समय प्रबंधनः यूपीएससी की तैयारी विभिन्न विषयों में समय को संतुलित करके तैयारी के बारे में है। कई संस्थान एक सुनियोजित कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो उम्मीदवारों को एक ही विषय की अधिक केंद्रित तैयारी को रोकने में मदद करता है। संसाधनों तक पहुंचः एक कोचिंग संस्थान में शामिल होना सुनिश्चित करता है कि उम्मीदवारों को सर्वोत्तम अध्ययन सामग्री, परीक्षण श्रृंखला और पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंच प्राप्त हो। क्या यूपीएससी क्रैक करने के लिए कोचिंग जरूरी है? यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका का मूल्यांकन करने के बाद, उम्मीदवारों को अभी भी भ्रम हो सकता है, 'क्या यूपीएससी को क्रैक करने के लिए कोचिंग आवश्यक है इस भ्रम का उत्तर उम्मीदवार से उम्मीदवार में भिन्न हो सकता है। ऐसे कई उम्मीदवार हैं जो औपचारिक कोचिंग के बिना सफल हुए हैं, लेकिन अन्य उम्मीदवारों को दिशा, प्रेरणा या अनुशासन की कमी के कारण यह आवश्यक लग सकता है।

कोचिंग संस्थान आम तौर पर संरचना, रणनीति और समर्थन प्रदान करके तैयारी प्रक्रिया को कारगर बनाने में मदद करते हैं, लेकिन वे व्यक्तिगत प्रयास, समर्पण और लगातार कड़ी मेहनत को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं।

यूपीएससी की तैयारी के लिए सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थान यूपीएससी की तैयारी के लिए सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थान पर विचार करते समय, भौतिकी वालेह अपनी अभिनव और सस्ती ऑनलाइन और ऑफलाइन कक्षाओं के लिए खड़ा है। संरचित शिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और इंटरैक्टिव सत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, भौतिकी वालेह राष्ट्रव्यापी छात्रों के लिए गुणवत्ता यूपीएससी कोचिंग को सुलभ बना रहा है।

यूपीएससी ऑनलाइन कक्षाओं के लिए अब नामांकन करें

निष्कर्ष यूपीएससी की तैयारी में कोचिंग संस्थानों की भूमिका कई उम्मीदवारों के लिए महत्वपूर्ण है, जो उन्हें भारत की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक से निपटने के लिए सही उपकरण, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं। हालांकि, सफलता व्यक्तिगत समर्पण और पाठ्यक्रम की स्पष्ट समझ पर निर्भर करती है। जबकि कोचिंग संस्थान समर्थन प्रदान करते हैं, संरचित शिक्षा के साथ संयुक्त एक स्व-संचालित दृष्टिकोण लंबे समय में सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त कर सकता है।

नीट युजी 2025: घर और ऐस परीक्षा में प्रभावी रूप से तैयार करने के लिए रणनीतियाँ

विजय गर्ग

नीट युजी 2025 परीक्षा में 23 लाख से अधिक आवेदकों के उपस्थित होने की उम्मीद के साथ, इस सम्मानित मेडिकल प्रवेश परीक्षा कॉल को केवल परिश्रम से अधिक के लिए पास करना। यह रणनीति, अनुशासन और चतुर तैयारी के लिए भी कहता है। यदि आप घर पर अध्ययन कर रहे हैं तो यह प्रक्रिया भारी लग सकती है, लेकिन आप सही रणनीति और एक स्पष्ट योजना के साथ अपने पहले प्रयास में सफल हो सकते हैं। विशेषज्ञों और टॉपर्स द्वारा समर्थित ये आठ आजमाए गए और परीक्षण किए गए तरीके, आपको घर पर नीट 2025 की तैयारी करने में मदद करेंगे।

1। एक यथार्थवादी अध्ययन योजना बनाएं और इससे चिपके रहें एक संरचित समय सारिणी आपकी नीट तैयारी की रीढ़ बनाती है। पूरे नीट पाठ्यक्रम का विश्लेषण करके और इसे दैनिक, साप्ताहिक और मासिक लक्ष्यों में तोड़कर शुरू करें। अपने कमजोर विषयों को प्राथमिकता दें और सुनिश्चित करें कि प्रत्येक दिन संशोधन के लिए समय शामिल है। एक सामान्य गलती ओवरशेड्यूल करना और नींद या आराम को अनदेखा करना है। याद रखें, ब्रेक के साथ एक संतुलित समय सारिणी लंबे समय में अधिक प्रभावी है।

2. एनसीईआरटी से शुरू करें: फंडामेंटल में महारत हासिल करें नीट काफी हद तक एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है, खासकर जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान के लिए। प्रत्येक अध्याय के माध्यम से विस्तार से जाएं, आरेखों को समझें, और सभी इन-टेक्स्ट प्रश्नों और उदाहरणों को हल करें। एक बार जब आप एनसीईआरटी के साथ आश्वस्त हो जाते हैं, तो आप आकाओं या टॉपर्स द्वारा अनुशंसित अतिरिक्त संदर्भ सामग्री के साथ अपनी शिक्षा को पूरक कर सकते हैं।

3। उद्देश्य के साथ अभ्यास करें: पीवाईकयु और मॉक टेस्ट पिछले वर्ष के प्रश्न पत्रों को हल करने से परीक्षा पैटर्न और कठिनाई स्तर में अंतर्दृष्टि मिलती है। इसके साथ ही, समय पर शर्तों के तहत नियमित रूप से पूर्ण लंबाई मॉक टेस्ट लें। प्रत्येक परीक्षण के बाद, अपनी गलतियों का विश्लेषण करें, कमजोर विषयों की पहचान करें और अपनी गति और सटीकता में सुधार करें। यह 200 मिनट के पेपर को कुशलता से संभालने के लिए महत्वपूर्ण है।

4। दीर्घकालिक प्रतिधारण के लिए स्मार्ट संशोधन तकनीक आपको नियमित रूप से संशोधित करने की आवश्यकता है। त्वरित याद के लिए माइंड मैप्स, फ्लैशकार्ड और छोटे नोटों का उपयोग करें। आप अंतर पुनरावृत्ति लागू कर सकते हैं- अंतराल पर विषयों की समीक्षा करना जो उत्तरोत्तर बढ़ते हैं (1 दिन, 3 दिन, 7 दिन)। आपको उच्च-वेटेज अध्यायों को दूसरों की तुलना में अधिक बार संशोधित करना चाहिए, विशेष रूप से सूत्र, प्रतिक्रियाएं और महत्वपूर्ण आरेख।

5। समय का प्रबंधन करें तैयारी के दौरान और वास्तविक परीक्षा में समय प्रबंधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक विषय के लिए निश्चित समय स्लॉट आवंटित करें और अपनी दैनिक प्रगति को ट्रैक करें। मॉक टेस्ट के दौरान, दिए गए समय सीमा के भीतर अपने स्कोर को अधिकतम करने के लिए लंबे प्रश्नों को छोड़ने और बाद में उनके पास लौटने के कौशल का अभ्यास करें।

6। सकारात्मक रहें और अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें नीट की तैयारी मैराथन है, स्प्रिंट नहीं। पर्याप्त नींद लेने, पौष्टिक भोजन खाने और नियमित रूप से व्यायाम करने से अपनी शारीरिक और मानसिक भलाई को प्राथमिकता दें। तनाव का प्रबंधन करने के लिए ध्यान या प्रकाश की तरह गतिविधियों में व्यस्त रहें। याद रखें, शिखर शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए एक स्वस्थ दिमाग और शरीर महत्वपूर्ण है।

7। मदद लें और जुड़े रहें घर से पढ़ाई करते समय भी साथियों, आकाओं या ऑनलाइन मंचों से जुड़े रहें। संदेह को स्पष्ट करने और युक्तियों को साझा करने के लिए यूट्यूब व्याख्यान, टेलीग्राम समूह और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करें। अन्य उम्मीदवारों के साथ चर्चा आपको विभिन्न समस्या-समाधान तकनीकों के लिए उजागर कर सकती है और अपनी प्रेरणा को उच्च रख सकती है। 8। आधिकारिक अपडेट के साथ बने रहें नियमित रूप से आधिकारिक नीट वेबसाइट पर जाएं और परीक्षा सूचनाओं, फॉर्म की समय सीमा, पाठ्यक्रम अपडेट और परीक्षा पैटर्न में बदलाव के बारे में सूचित रहने के लिए विश्वसनीय सोशल मीडिया हैंडल का पालन करें। अप-टू-डेट होना सुनिश्चित करता है कि कोई अंतिम-मिनट आश्चर्य न हो।

उत्कृष्ट खिलाड़ी को कम से कम

आज फिर राज्य में विभिन्न खेलों सहित तेज गति के उभरते हुए खिलाड़ी व एथलीट हैं जिनको वजीफे की बहुत अधिक 2026 में जरूरत है। इनके पास नौकरी नहीं है। सामान्य परिवारों से इनका संबंध है और जो हिमाचल से पलायन कर गए हैं, हिमाचल सरकार सम्मानजनक नौकरी दे तथा इन सभी एथलीटों को 2026 खेलों तक वजीफा भी दे। इस स्तर पर अपना अभ्यास जारी रखने के लिए महीने में पचास हजार रुपए चाहिए होते हैं। जो नौकरी में हैं वो तो बहुत कठिनाई से अपने वेतन से कुछ न कुछ जुगाड़ कर लेते हैं, मगर जो विद्यार्थी व बेरोजगार हैं, वे कैसे अपना अभ्यास जारी रखेंगे

आज जब विज्ञान ने बहुत उन्नति कर स्वास्थ्य में जहां काफी सुधार किया है, वहीं पर खिलाडियों के उपकरणों व प्ले फील्ड में भी काफी सुधार हुआ है। यही कारण है कि पिछले बनाए गए कीर्तिमान आसानी से हर वर्ष टूटते रहते हैं। पहले जब खेल प्रतियोगिता होती थी तो आयोजक प्रतिभागियों को खाना व रहना देते थे। यात्रा किराया व दैनिक भत्ता राज्य खेल संघ दे देते थे, मगर अब यह सब खिलाड़ी को वहन करना पड़ता है। रेल में सीट आरक्षित करवाना भी बड़ी जंग जीतने से कम नहीं है। खिलाड़ी कम थके, इसलिए हवाई यात्रा भी करना जरूरी हो जाता है। खिलाडियों के प्रयोग में होने वाले जूते व किट बहुत महंगी आती है। एक प्रतियोगिता का खर्चा पचास हजार रुपए तक पहुंच जाता है। सामान्य परिवार का बच्चा कैसे राष्ट्रीय स्तर खेल कर पाएगा, कभी सोचा है। खेलों को राज्य सूची का विषय बना रखा है। केन्द्र व राज्य अपनी अपनी सुविधा अनुसार जब चाहे पला झाड़ लेता है। खिलाड़ी प्रदेश व देश के लिए गौरव लाता है तो फिर सरकारें प्रतिभाशाली खिलाडियों को सीधा वजीफा क्यों नहीं देती हैं। एथलेटिक्स, कुश्ती, मुक्केबाजी व अन्य कई खेल हैं जिनमें हिमाचल के स्टार राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में बहुत बढिया प्रदर्शन कर रहे हैं, मगर खेल जारी रखने के लिए उन्हें काफी धन की जरूरत होती है। इसलिए अधिकतर खिलाडियों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है।

मानव शरीर ईश्वर द्वारा बनाई गई बहुत ही अद्भुत मशीन है। इसे चलाने के लिए भी ईंधन की जरूरत होती है। मानव शरीर के ऊर्जा चक्र को समझने के लिए हमें एटीपी से लेकर सीपी, लैक्टिक एसिड, शरीर से ऑक्सीजन की उधारी व सांस द्वारा ऑक्सीजन का फेफड़ों में पहुंच कर खून के साथ मिलकर फिर सैल का पहुंच कर शरीर को गतिशील बनाए रखने का गहन अध्ययन जरूरी है। सौ से लेकर चार सौ मीटर की दौड़ों को तेज गति में गिना जाता है। गति ही सभी स्पर्धाओं व खेलों की जीत का मूल मंत्र है। यह खिलाड़ी में जन्मजात होती है। प्रशिक्षण द्वारा भी इसमें बहुत ही कम एक उम्र तक विकास होता है। ओलंपिक खेलों में विभिन्न खेलों की कई स्पर्धाएं आयोजित होती हैं, मगर एथलेटिक्स का आकर्षण सबसे अधिक होता है। ओलंपिक में जो धावक सौ मीटर की दौड़ में विजेता बनता है, वह पृथ्वी का तीव्रतम इनसान बनता है। सौ मीटर की दौड़ का अद्भुत रोमांच होता है। हिमाचल प्रदेश में तेज गति के बहुत कम धावक व धाविकाएं आज तक सामने आए हैं। सौ मीटर से लेकर चार सौ मीटर की स्पर्धाओं को स्पिरिट यानी तेज गति की दौड़ों में रखा है। इन स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए जहां जन्मजात स्पीड चाहिए होती है, वहीं पर बहुत अधिक स्पीड इंडोरैंस व स्ट्रैंथ ट्रेनिंग की जरूरत होती है। जहां उच्च कोटि का प्रोटीन आम आदमी को आसानी से उपलब्ध होता है, वहीं के लोगों में अच्छी स्पीड जन्म से ही होती है। स्पीड को बहुत छोटी उम्र से ही विकसित करना पड़ता है। इसलिए स्पीड पर प्रशिक्षण दस वर्ष से भी कम आयु में शुरू करना पड़ता है। अगले पांच सालों में स्पीड अपने उच्च स्तर तक विकसित हो जाती है। यह भी कहा जाता है कि स्पिरिटर पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते। भारत के अधिकतर स्पिरिटर समुद्र तट से संबंध रखते हैं। मछली इन लोगों का मुख्य आहार है। मछली में अच्छी गुणवत्ता का प्रोटीन मिलता है। उत्तर भारत में शाकाहारी अधिक हैं, मगर गेहूं, दूध उससे बने पदार्थों में भी अच्छी क्वालिटी का प्रोटीन मिलता है। यह भी कारण है कि पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश से भी समय-समय पर अच्छे स्पिरिटर मिलते रहते हैं और जिस किशोर खिलाड़ी में स्पिरिट जितनी अधिक होगी, वह उतना ही अच्छा किसी भी खेल का खिलाड़ी बनेगा। प्रदेश से वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुष्पा ठाकुर ही एकमात्र धाविका है जो हिमाचल प्रदेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 400 मीटर में पदक विजेता है। एशिया व ओलंपिक खेलों के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविरों तक पहुंचने वाली इस धाविका के बाद अभी तक कोई भी पुरुष या महिला हिमाचल प्रदेश के लिए वरिष्ठ राष्ट्रीय स्तर का पदक नहीं जीत पाई है। आज फिर राज्य में विभिन्न खेलों सहित तेज गति के उभरते हुए खिलाड़ी व एथलीट हैं जिनको वजीफे की बहुत अधिक 2026 में जरूरत है। इनके पास नौकरी नहीं है।

सामान्य परिवारों से इनका संबंध है और जो हिमाचल से पलायन कर गए हैं, हिमाचल सरकार सम्मानजनक नौकरी दे तथा इन सभी एथलीटों को 2026 खेलों तक वजीफा भी दे। इस स्तर पर अपना अभ्यास जारी रखने के लिए महीने में पचास हजार रुपए चाहिए होते हैं। जो नौकरी में हैं वो तो बहुत कठिनाई से अपने वेतन से कुछ न कुछ जुगाड़ कर लेते हैं, मगर जो विद्यार्थी व बेरोजगार हैं, वे कैसे अपना अभ्यास जारी रखें, यह हिमाचल सरकार को सोचना होगा। क्या प्रदेश सरकार कुछ उपकार इन प्रतिभाशाली एथलीटों पर करेगी ताकि वे फ्री माइंड होकर अपना प्रशिक्षण जारी रख सकें। खिलाड़ी बनाए नहीं जाते हैं, वे जन्म से ही अलग होते हैं। लाखों बच्चों में कोई एक प्रतिभाशाली एथलीट मिलता है। समाज व सरकार का दायित्व है कि वे भविष्य में देश को गौरव दिलाने वाले अति प्रतिभाशाली खिलाडियों को गोद लेकर उन्हें वे सब सुविधाएं उपलब्ध करवाएं जो एक विश्व विजेता को अपने शुरुआती दौर में यूरोप व अमेरिका के देश देते हैं।

तकनीक की रफ्तार

विजय गर्ग

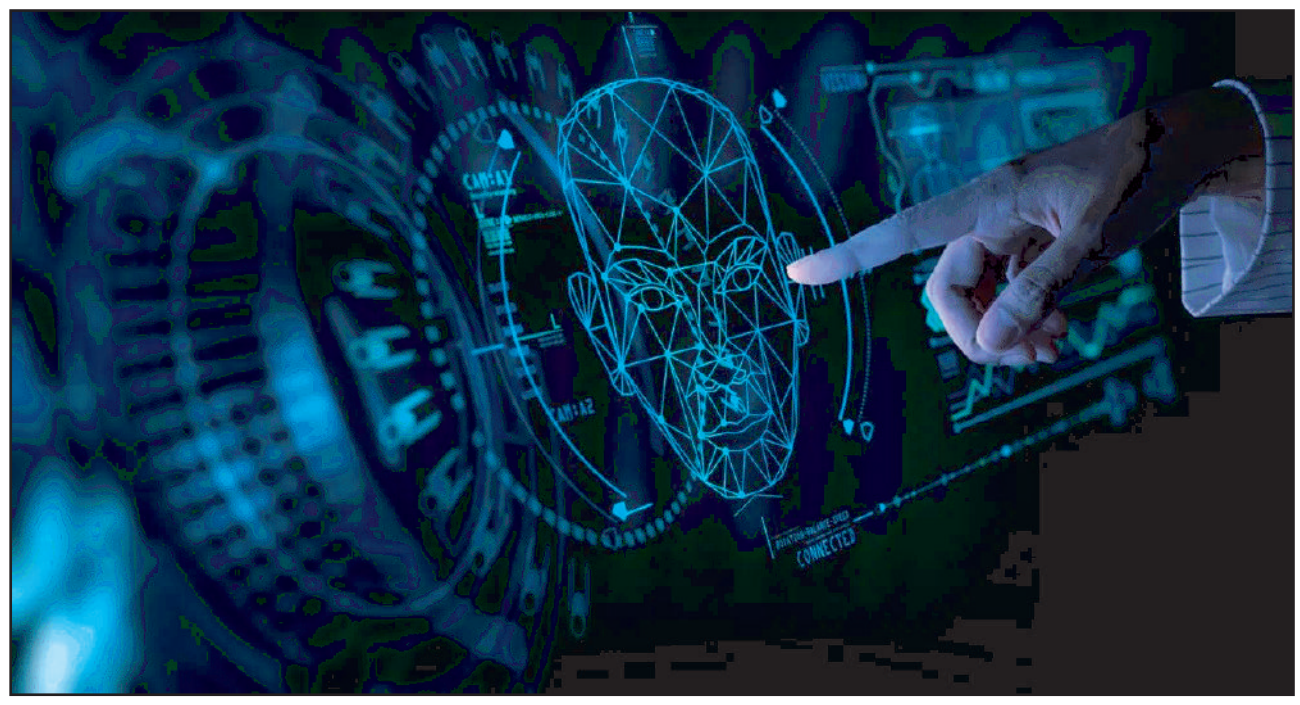

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआइ (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) शब्द सामान्य जन की बातचीत में चिंता के साथ शामिल हो चुका है । रोज एआई के चौंकाने वाले कारनामे खबरों में आ रहे हैं। कहा जा रहा है कि यह रोबोट से जुड़ कर वे तमाम काम कर लेगा, जो इंसान करते हैं। इंसान को तो हम जानते ही हैं। वह सारे काम तो अच्छे करता नहीं है । यों कहें कि अब कई बार वह गैर-इंसानी काम ज्यादा करने लगा हैं, तो गलत नहीं होगा। कुछ समय पहले सोशल मीडिया पर एक खबर चली कि एक रोबोट ने अपनी मालकिन को मार डाला !एक विचार यह भी चल रहा है कि एआइ संपन्न रोबोट अपनी तरह के रोबोट खुद बनाने लगेगा, जैसा कि प्रकृति ने प्राणियों को यह शक्ति दी है कि वह अपनी तरह का प्राणी बना लेते हैं । मगर अब मशीन ऐसा कर लेगी तो हैरत की बात है। यानी रोबोट अपनी जनसंख्या बढ़ाने की स्थिति में आ सकते हैं ।

ऐसे अनुमान भी सामने आए हैं कि ये रोबोट अब सैनिकों की जगह युद्ध लड़ेंगे। पुलिस की तरह वे सारे काम करेंगे ! वे सड़क पर यातायात का नियंत्रण करेंगे, वाहनों की रफ्तार चेक करेंगे, चालान बनाएंगे और पैसा वसूलेंगे । बड़ी इमारत या माल वगैरह की चौकीदारी भी इनके जिम्मे होगी और अगर कोई संदिग्ध आदमी नजर आया तो उसे मार भी सकते हैं। कुछ कार्य ऐसे हैं, जिन्हें करने का निर्णय एआइ सज्जित प्रणाली खुद ले लेती है। जैसे मिसाइल का पता लगाकर उसे नष्ट करने का यांत्रिक निर्णय । दुश्मन के खिलाफ यह रक्षात्मक है, लेकिन मशीन कब ' पोरस का हाथी' हो जाए, इसके डर से इनकार नहीं किया जा सकता है। कल्पना की उड़ान यहां तक जाती है कि वह समय दूर नहीं जब एआइ रोबोट हम पर राज करने लगेंगे। इंसान रोबोट पर पहले निर्भर होगा, उसके बाद गुलाम हो जाएगा। इसका असर यह भी हो सकता है कि रोबोट हिंसक हो जाए या अपने विवेक या 'प्रोग्रामिंग' के हिसाब से जरूरी समझेंगे तो आदमी को खत्म ही कर दे।

इन दिनों विद्यार्थी एआइ तकनीक पर बहुत ज्यादा भरोसा करने लगे हैं। पढ़ाई-लिखाई में इनसे मदद मिलती है, रपट बनाई जाती है, प्रोजेक्ट तैयार किए जाते हैं । यह काम फटाफट यानी चुटकियों में हो जाता है। हम अपने सामान्य जीवन के कार्यों में हिसाब-किताब, जोड़-घटाव करने के लिए कैलकुलेटर का सहारा लेते हैं। हमारे बीच से वह पीढ़ी जा चुकी है जो बिना कैलकुलेटर के केवल मुंहजबानी सारा हिसाब जोड़-घटाव कर लेती थी । पौवा - अद्धा - पौना, पहाड़े सबको याद थे। अब अगर एआइ के सहारे प्रोजेक्ट की रपट बनेगी, शोध-पत्र तैयार किए जाएंगे तो इससे विद्यार्थियों की रचनात्मकता और मौलिकता कम होगी, विचारों को विकसित होने के अवसर कम हो जाएंगे। दस्तावेजों और फाइलों में बच्चे अच्छा करते दिखेंगे, लेकिन हकीकत की जमीन पर वे बहुत पीछे रहेंगे।

मौजूदा समय में इस तरह के विचार हमें अतिशयोक्ति पूर्ण लग सकते हैं, लेकिन देखें कि इन दिनों हाल क्या है। आज लगभग हर हाथ में मोबाइल या स्मार्टफोन है। इसमें हमारे बैंक खाते और उसका ब्योरा, निजी जानकारी, फोटो वगैरह सब है । हम सोशल मीडिया पर जो देखते हैं, उससे हमारी गतिविधि दर्ज हो जाती है। कहां होती है, कौन करता है, यह हम नहीं जानते हैं। लेकिन जल्द ही फोन पर हमारी 'सर्च' यानी खोजने के विषय के अनुसार अलग-अलग वेबसाइट खुलने लगती है। । हमने बिजली के पंखे को खोजा तो अगले कुछ दिनों तक हमें पंखे दिखाते रहेंगे, जब तक कि हमारी पंखों की खरीदी दर्जन हो जाए। बैंक खाते में पैसा जमा होता है और निवेश की योजनाएं सामने आने लगती हैं। दवा से लगाकर जूते तक, कुछ भी हमने देखा कि घेरे गए । निजता को लेकर हमारे पास कोई गारंटी नहीं है। हम कहां और किस काम के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं, हमें पता नहीं है । यह निजता का उल्लंघन है। सोशल मीडिया और इंटरनेट के बिना सामान्य जीवन संभव नहीं रह गया है, लेकिन फर्जी खबरें और वीडियो की इतनी भरमार है कि हम भ्रमित और डरे हैं। एआइ से दिवंगत - जनों को चलते-फिरते बात करते देखा जा सकता है। एआइ की हरकत है कि सोशल मीडिया से तस्वीर लेकर किसी भी आदमी को कुछ भी करते हुए दिखाया जा सकता है। ऐसे काम आमतौर पर अश्लील ही होते हैं । इससे अच्छे-भले व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा धूल में मिल सकती है।

एआइ पूरी तरह से प्रभावशील हो, उससे पहले इस पर नियंत्रण की जरूरत है। इसके लिए जरूरी शोध होने चाहिए और कानून भी बनाना चाहिए। जैसे समाज भले व्यक्तियों और अच्छे कामों को प्रोत्साहित करता है और बुरे व्यक्तियों और बुरे कामों को हतोत्साहित करता है, इसी तरह एआइ के अच्छे पक्ष को बढ़ाना चाहिए, लेकिन नुकसान देने वाली गतिविधियों पर रोक लगाने की कोशिश करना चाहिए। लोगों को भी एआइ के प्रति जागरूक और सावधान होना होगा। घोड़े की सवारी बिना लगाम के खतरनाक होती है।

इ्रम के भ्रम में हलकान गृहस्थी

विजय गर्ग

सरकारी स्कूल के हिंदी विषय के मास्टर जी बच्चों को आए दिन लव अफेयर्स से लेकर करंट अफेयर्स पर निबंध लिखवाते रहते हैं ताकि वे भविष्य के बेरोजगार युवाओं के बदले आकांक्षी युवाओं को तैयार कर सकें। आजकल के जीवन में ड्रम की बढ़ती उपयोगिता को देखते हुए कल उन्होंने अपनी क्लास को घर से ड्रम पर मौलिक निबंध लिख कर लाने को कहा। सुधी ड्रम प्रेमियों के समक्ष पेश है क्लास के हिंदी को स्वर्णकाल बनाने वाले सबसे होनहार छात्र का मौलिक, सारगर्भित निबंध— हमारे घर की हर चीज से दो दो काम लिए जाने की परंपरा है। उदाहरण के लिए मसाला कूटने के डंडे को ही ले लीजिए। ये मसाला कूटने के काम भी आता है और शरारत करने पर हमें कूटने के काम भी।

हमारे घर में झाड़ू फर्श की सफाई करने के काम ही नहीं आता। जब हम शरारत नहीं भी करते तो वह सफाई के बजाय बेकार में भी हमारी धुनाई करने के काम आता है। कई बार मां गुस्से में आकर पिताजी को भी झाड़ू दिखा देती है। हमारे घर में चप्पल पहनने के काम ही नहीं आते। उनका भी हमारे घर में दोहरा प्रयोग होता है। चप्पल पहनने के साथ साथ जब हम बच्चे घर में कोई गलती करते हैं वह खाने के काम भी आती है।

पहले हमारे घर में दो छोटे तीन बड़े ड्रम थे। अब सब छोटे-छोटे हैं। एक ही साइज पहले हमारे घर में दो छोटे तीन बड़े ड्रम थे। अब सब छके। हमारे घर के नल में हफ्ते बाद जल आता है। इसलिए पिताजी ने तीन बड़े-बड़े ड्रम लाकर रखे थे। एक बड़ा ड्रम गुसलखाने में रखा गया था। ताकि जो हफ्ता भर पानी न आए तो हफ्ता भर उससे पानी लेकर मजे से नहाया-धोया जा सके। दूसरा बड़ा ड्रम किचन में रखा गया था। तीसरा बड़ा ड्रम बाहर क्यारियों में फूलों को पानी देने को रखा गया था। इसके अतिरिक्त हमारे घर में दो छोटे छोटे ड्रम भी हैं। इनमें सरकारी राशन की दुकान से मिले आटा चावल रखे जाते हैं।

कुछ दिन पहले पिताजी और मां ने सहमति न होने के बावजूद आपसी सहमति से बड़े बड़े ड्रम घर से हटा कबाड़ी को मुफ्त में दे दिए। जबकि मां खाली हुई टूथपेस्ट की ट्यूब तक कबाड़ी को मुफ्त में नहीं देती। अब गुसलखाने में ड्रम की जगह एक एक्स्ट्रा बाल्टी लाकर रखी गई है, जो बहुत छोटी है। जिसके चलते पानी की तंगी हो गई है। इस बारे में जब मैंने पिताजी से पूछा तो उन्होंने बताया कि इन दिनों समाज में ड्रम का पानी भरने के लिए कम दूसरे कामों में उपयोग अधिक हो रहा है। किसी भी टाइप के ड्रम आजकल सुरक्षित से अति सुरक्षित घरों में भी खतरनाक साबित हो रहे हैं। ऐसे में जिस घर में ड्रम नहीं होंगे, वह घर मम्मी डैडी के लिए उतना ही सेफ होगा।

सिविल सेवा दिवस आज

यह दिवस देश में विभिन्न सार्वजनिक सेवा विभागों में कार्यरत अधिकारियों के काम को मान्यता देने के लिए हर साल 21 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दिन सिविल सेवकों को देश की प्रशासनिक मशीनरी को सामूहिक रूप से और नागरिकों की सेवा के लिए समर्पण के साथ चलाने की याद दिलाता है। और इस दिन को मनाने के लिए कोई आधिकारिक थीम नहीं है।

जैसा कि हम जानते हैं कि सिविल सेवा वह सेवा है जो देश की सरकार के सार्वजनिक प्रशासन के लिए जिम्मेदार होती है। इसमें विधायिका, न्यायपालिका और सैन्य कर्मी शामिल नहीं होते हैं। आपको बता दें कि सिविल सेवा के सदस्य किसी भी राजनीतिक सत्तारूढ़ दल के लिए कोई प्रतिज्ञा नहीं लेते हैं, बल्कि सत्तारूढ़ राजनीतिक दल की नीतियों के क्रियान्वयनकर्ता होते हैं।

भारत में सिविल सेवा में भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS), भारतीय विदेश सेवा (IFS), और अखिल भारतीय सेवाओं और केंद्रीय सेवाओं के ग्रुप A और ग्रुप B की एक व्यापक सूची शामिल है। 21 अप्रैल को सिविल सेवा के लोगों को उनकी अनुकरणीय सेवाओं का स्मरण करने और पिछले वर्षों में उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद करने के लिए समर्पित किया जाता है। साथ ही, इस दिन वे आने वाले वर्ष के लिए योजनाएँ बनाते हैं और अपने संबंधित विभागों के लिए उन्हें कैसे काम करना है।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस का इतिहास

सिविल सेवा शब्द ब्रिटिश काल से चला आ रहा है जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नागरिक कर्मचारी प्रशासनिक कार्यों में शामिल थे और उन्हें 'लोक सेवक' के रूप में जाना जाता था। इसकी नींव वॉरेन हेस्टिंग्स ने रखी थी और बाद में चार्ल्स कॉर्नवालिस द्वारा और अधिक सुधार किए गए और इसलिए उन्हें ₹भारत में सिविल सेवाओं के जनक₹ के रूप में जाना जाता है।

21 अप्रैल की तारीख 1947 में उस दिन को याद करने के लिए चुनी गई थी जब स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने दिल्ली के मेटकाफ हाउस में प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के परिवीक्षार्थियों को संबोधित किया था। उन्होंने सिविल सेवकों को 'भारत का स्टील फ्रेम' कहा था। यानी सरकार के विभिन्न विभागों या विभिन्न स्तरों पर काम करने वाले सिविल सेवक देश की प्रशासनिक व्यवस्था के सहायक स्तंभों के रूप में कार्य करते हैं।

21 अप्रैल को राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है?

इसकी उत्पत्ति वर्ष 1947 से जुड़ी है, जब 21 अप्रैल को स्वतंत्र भारत के गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने दिल्ली के मेटकाफ हाउस में अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा प्रशिक्षण स्कूल में परिवीक्षाधीन अधिकारियों को संबोधित किया था। उन्होंने एक शक्तिशाली भाषण दिया और सिविल सेवकों को पिछले अनुभव को पीछे छोड़कर राष्ट्रीय सेवा की सच्ची भूमिका अपनाने के लिए सशक्त बनाया। अपने भाषण में उन्होंने सिविल सेवकों को 'भारत का स्टील फ्रेम' कहा। इस तरह का पहला समारोह 21 अप्रैल 2006 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। और तब से 21 अप्रैल को राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस का महत्व यह दिन सरकारी कर्मचारियों को पहचान दिलाने और उन्हें प्रेरित करने के लिए मनाया जाता है। प्रशासन इस दिन दिग्गजों की उपलब्धियों को मान्यता देते हुए उन्हें उनकी सेवा के लिए पदक प्रदान करता है। भारत के प्रधानमंत्री इस दिन देश के सिविल सेवकों को सार्वजनिक सेवा में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान करते हैं।

इसके मुख्य उद्देश्य ये हैं: सिविल सेवा अधिकारियों के कार्य और प्रयासों को प्रेरित करना और उनकी सराहना करना। केन्द्र सरकार इस अवसर का उपयोग सिविल सेवाओं के अंतर्गत विभिन्न विभागों के कार्यों के मूल्यांकन के लिए करती है।

केन्द्र सरकार सर्वोत्तम कार्य करने वाले व्यक्तियों और समूहों को सम्मानित और पुरस्कार प्रदान करती है।

सिविल सेवा दिवस के बारे में तथ्य 21 अप्रैल, 1947 को सरदार वल्लभ भाई पटेल ने मेटकाफ हाउस में स्वतंत्र भारत के सिविल सेवकों के पहले समूह को भाषण दिया। अपने उत्साहवर्धक भाषण में उन्होंने लोक सेवकों को ₹भारत का इस्पात ढांचा₹ कहा। 1947 के बाद भारतीय सिविल सेवा अपने वर्तमान स्वरूप में विकसित हुई। भारत में प्रवास करने वाले पहले भारतीय सत्येन्द्रनाथ टैगोर थे।

एक आईएएस अधिकारी का सबसे वरिष्ठ पद कैबिनेट सचिव का होता है। अन्ना जॉर्ज मल्होत्रा आईएएस पद पर आसीन होने वाली पहली महिला थीं। पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी हैं। आईएफएस अधिकारी बेनो जेफीन एनएल पूरी तरह से अंधे हैं। इस दिन केंद्र और राज्य सरकारों के सभी अधिकारियों को लोक प्रशासन के क्षेत्र में उनकी असाधारण सेवाओं के लिए भारत के प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित किया जाता है। और यह समारोह प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग (DARPG) और कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाता है।

हर साल लाखों उम्मीदवार लगभग एक हजार पदों के लिए भारतीय सिविल सेवा परीक्षा के लिए आवेदन करते हैं। लेकिन हम इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते कि सिविल सेवा वह स्तंभ है जिस पर सरकार देश के लिए नीतियाँ और कार्यक्रम चलाती है। समाज और राष्ट्र के लिए सिविल सेवकों के योगदान को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। इसलिए, राष्ट्र के लिए उनके अपार योगदान के लिए सिविल सेवकों को प्रोत्साहित करने के लिए 21 अप्रैल को सिविल सेवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती के अवसर पर पुणे में 'माइनॉरिटी यूथ पार्लियामेंट' का भव्य आयोजन

युवाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा और रोजगार पर विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों का मार्गदर्शन
मुसलमानों ने हमेशा मोहब्बत से दिया नफ़रत का जवाब

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

पुणे: महाराष्ट्र के पुणे में संविधान शिल्पकार बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती के अवसर पर पुणे के गणेश कला क्रीडा संकुल में 'माइनॉरिटी यूथ पार्लियामेंट' किया गया। इस अल्पसंख्यक युवा संसद में अल्पसंख्यक समुदाय के युवाओं के सशक्तिकरण के लिए नौकरी, शिक्षा और रोजगार जैसे कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर कार्यक्रम में गहन चर्चा की गई।

पुणे में आयोजित माइनेरिटी यूथ संवाद के मंच से बोलते हुए पूर्व आईपीएस अब्दुरहमान ने विधानसभा और संसद में अल्पसंख्यकों की संख्या बढाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मुसलमान इस देश की सबसे बडा अल्पसंख्यक समुदाय है लेकिन आबादी के अनुपात में संसद और विधानसभा में उसकी भागीदारी हमेशा कम रही है। वहीं लोकसभा सांसद पप्पू यादव ने इस युवा संसद को संबोधित करते हुए कहा कहा कि देश में सबसे बडी आबादी वंचित लोगों की है, संसाधनों का समान रूप से बंटवारा ना होने की वजह से देश में असमानता और ग़रीबी बढी है। जिसे छिपाने के लिए सरकार द्वारा अनर्गल मुद्दे उठाए जाते हैं। हमें देश को फिजूल के मुद्दों में उलझने से बचाना है। इस युवा संसद को दिल्ली से आए पत्रकार एवं एक्टिविस्ट वसीम अकरम त्यागी ने भी संबोधित किया। त्यागी ने कहा कि मुसलमानों ने हमेशा नफरत का जवाब मोहब्बत से दिया है। जब कोरोना में त्राहिमाम मचा था, तब मुसलमानों ने दम तोड़ती जिंदगियों को आक्सीजन पहुंचाकर बचाया था। हाल ही में संपन्न हुए कुंभ में भी मुसलमानों ने नफरती मीडिया के फर्जी नैरेटिव को तोडा, कुंभ नहाने आए श्रद्धालू मुसलमानों द्वारा की गई मेहमान नवाज़ी से इतने खुश थे कि उन्होंने खुद ही कहा कि हमें मालूम नहीं था मुसलमान इतने बडे सेवक हैं, मेहमान नवाज़ हैं।

वसीम अकरम त्यागी ने कहा भारत में मुसलमान क़रीब 21 करोड़ के आस पास हैं, मुसलमानों की यह आबादी इंडोनेशिया और पाकिस्तान के बाद किसी भी देश में सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी है। जब इतनी बड़ी आबादी है तो यह किसी आस, उम्मीद और हक़ पर ज़िंदा रही है। तो भारत में जब मुसलमान गांधीजी और बाबा साहेब के चेहरे और संविधान को पढ़ता है तो बंटवारे के बाद मुसलमान के नाम पर बनाए गए देशों में नहीं जाता है।

णे में आयोजित इस युवा संसद में देशभर के प्रख्यात नेता, सामाजिक कार्यकर्ता और धर्मगुरु उपस्थित रहे और उन्होंने युवाओं का मार्गदर्शन किया। मुख्य अतिथियों में बिहार के सांसद माननीय पप्पू यादव, कश्मीर के सांसद माननीय मोहिबुल्लाह नदवी, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष माननीय हर्षवर्धन सपकाल, विधान परिषद में विपक्ष के नेता माननीय अंबादास दानवे, पूर्व गृह राज्यमंत्री रमेश दादा बागवे, माननीय कार्य साहब मुस्लिम धर्मगुरु, माननीय मोहन जोशीजी, पूर्व अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष हाजी अरफात शेख, ईसाई धर्मगुरु और समाज सुधारक बिशप थॉमस डाबरे, राष्ट्रवादी युवक कांग्रेस (शरद पवार गुट) के प्रदेशाध्यक्ष श्री महबूब शेख, ईसाई नेता पीटर डिसूजा, एनएसयूआई के पूर्व अध्यक्ष अॅड. अमीर शेख, राष्ट्रवादी युवक कांग्रेस के युवा नेता पाहत अहमद और उमेश चव्हाण, रुग्ण हक्क परिषद के संस्थापक जैसे कई गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

कार्यक्रम का आयोजन माननीय हाजी जुबैर मेमन, सत्यवान गायकवाड, एडवोकेट सुल्तान फतेह अली खान, फिरोज महसूलदार, बलिक नोमानी और फरीद खान ने संयोजक के रूप में कुशलतापूर्वक किया।

कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए गए, जिसमें अल्पसंख्यक युवाओं के सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक विकास के लिए नीतिगत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया। महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों से आए युवाओं ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भाग लिया।

"मृत्यु का मर्म और मोक्ष का मेला"

— डॉ. सत्यवान सौरभ

बोल उठे बाबा बागेश्वर,
"मृत्यु है मृगमरीचिका भर।
शरीर छूटे, आत्मा हँसे,
मोक्ष वही जो भय से न डरे।"

धूप थी, भीड़ थी, जयकारा था,
पर एक दृश्य भीतर ही कुछ हारा था।
लो, आया वह साधु सम्राट,
अपने पीछे सुरक्षा की बारात।

चार थानों की छाँव में कथा चली,
धर्म हैरान था, गाड़ी बुलेटप्रूफ चली।
संग थे अंगरक्षक, बाउंसर, पहरेदार,
मोक्ष का रास्ता था, जैसे जेल की दीवार।

श्रद्धा खड़ी थी नंगे पाँव,
और बाबा के चारों ओर लोहा था, काँच का छाव।
भक्तों ने पूछा —
₹बाबा! जो अमर है, उसे भय किस बात का?₹
बाबा मुस्काए —
₹यह भी एक लीला है प्रभु की सौगात का।₹

कभी कहते — ₹भीड़ में मरे तो मोक्ष मिलेगा₹,
अब कहते — ₹भीड़ से डर है, व्यवस्था कड़ी रखो भैया।₹
क्या यही है त्याग? यही सन्यास?
या है धर्म अब एक सुरक्षित विकास?

जिस देह को त्यागने की बात हो रही,
उसी के लिए सुरक्षा की घेराबंदी क्यों हो रही?
क्या आत्मा की अमरता पर तुम्हें खुद भी संदेह है?
या फिर मोक्ष के मार्ग पर भी स्पेशल एक्सप्रेस है?

हे बाबा!
तुम्हारे प्रवचन तो स्वर्ग तक पहुँचते हैं,
पर तुम्हारे काफिले
तोप-तमंचों की ज़मीन पर चलते हैं।
धर्म अगर निर्भयता है,
तो तुम भय के किस पंथ पर हो?

"बाबा बुलेटप्रूफ: श्रद्धा के पीछे सुरक्षा की फौज"

मोक्ष की बात, मगर मौत का डर: बाबा की सुरक्षा का रहस्य

"बाबा की सुरक्षा: आत्मा अमर है, लेकिन बॉडीगार्ड चाहिए!"

जो संत मोक्ष, आत्मा की अमरता और मृत्यु से भयमुक्त रहने का उपदेश देते हैं, वे स्वयं भारी सुरक्षा घेरे में क्यों रहते हैं? कैसे आज के आध्यात्मिक गुरु धर्म से अधिक इवेंट मैनेजमेंट में लगे हैं, और सरकारें उन्हें सुरक्षा देकर राजनीति और वोट बैंक साधती हैं। यदि बाबा वाकई मृत्यु को एक भ्रम और आत्मा को अजर-अमर मानते हैं, तो फिर उन्हें सुरक्षा की क्या ज़रूरत? असली संत वही होता है जो सत्य के साथ निर्भय खड़ा हो — न कि सुरक्षा घेरे में छिपा हो।

डॉ. सत्यवान सौरभ

"शरीर नाशवान है, आत्मा अजर-अमर। मृत्यु तो केवल एक परिवर्तन है, उससे भय नहीं करना चाहिए।"

यह वाक्य किसी आध्यात्मिक प्रवचन से नहीं, बल्कि देश के सबसे चर्चित युवा बाबा, बागेश्वर धाम सरकार धीरेन्द्र शास्त्री के किसी भी कार्यक्रम में बार-बार दोहराया जाता है। लेकिन जिस बाबा की वाणी में मृत्यु के प्रति भयमुक्ति का यह अमृत बहता है, वही बाबा जब Y श्रेणी सुरक्षा में चार थानों की फोर्स, सैकड़ों पुलिसकर्मी, दर्जनों बाउंसर और निजी सुरक्षाकर्मियों से घिरे दिखते हैं, तो आम आदमी की आत्मा चिल्ला उठती है — ₹बाबा, ये क्या चल रहा है?₹

बीते सप्ताह बाबा बीकानेर के पास नोखा क्षेत्र में एक धर्मात्मा उद्योगपति के नव-निर्मित भवन के 'प्रवेशोत्सव' में पधारे। धर्म, भक्ति और आडंबर का ऐसा संगम था कि खुद त्रिदेव भी यदि आ जाते तो भीड़ को चीरते हुए मंच तक न पहुँच पाते। बाबा के स्वागत में फूल बरसे, जयघोष गूंजे, और रंगीन अख़बारों में दो-दो पृष्ठों पर उनके दर्शन, उपदेश और सुरक्षा तंत्र का महिमामंडन हुआ।

आत्मा अमर, लेकिन अंगरक्षक जरूरी?

जिस गुरु की वाणी से मृत्यु का भय मिटाने का दावा होता है, वह स्वयं बुलेटप्रूफ गाड़ियों में चलता है, निजी अंगरक्षकों की सेना रखता है, और सरकार से वाई श्रेणी की सुरक्षा लेता है। क्या मोक्ष के मार्ग पर चल रहे संतों के लिए यह सांसारिक सुरक्षा ज़रूरी हो गई है? अगर आत्मा अमर है, और मृत्यु केवल शरीर का त्याग, तो फिर यह सुरक्षा किससे? असुरक्षा का डर किसका? क्या यह जनता के विश्वास के साथ धोखा नहीं?

बाबा का भय किससे?

कहा जा सकता है कि संतों को विरोधियों, असामाजिक तत्वों से खतरा हो सकता है। लेकिन यह तर्क खुद बाबा के उपदेशों से खारिज हो जाता है। बाबा कहते हैं — ₹डर केवल अज्ञानी को होता है। जब ईश्वर साथ हो, तो कोई क्या बिगाड़ सकता है?₹ फिर, जब भक्तों की भीड़, पुलिस का पहरा और सरकार की छत्रछाया है, तो बाबा को किस 'मृत्यु' का भय है?

क्या यह वही बाबा नहीं हैं जिन्होंने प्रयागराज महाकुंभ की भगदड़ में मारे गए लोगों को 'मोक्षप्राप्त' घोषित कर दिया था? अगर भगदड़ में मरे तीर्थयात्री स्वर्ग सिधार सकते हैं, तो फिर बाबा को तो इस भीड़ में परमानंद ही मिलना चाहिए!

क्या यह आध्यात्मिकता है या इवेंट मैनेजमेंट?

किसी साधु का इतने सुरक्षा घेरे में आना अब कोई दुर्लभ दृश्य नहीं रहा। बाबा धीरेन्द्र शास्त्री जैसे 'इंफ्लुएंसर संत' अब सत्संग कम और इवेंट ज्यादा करते हैं। स्टेज पर बड़ी एलईडी स्क्रीन, सफेद लाइट, ढोल-नगाड़ों के बीच उनकी एंट्री होती है, और इसके पीछे होती है पूरी 'प्रोटोकॉल टीम' — जैसे कोई बॉलीवुड सुपरस्टार पहुंच रहा हो। क्या अब आध्यात्मिकता का मोल लोगों की आस्था से नहीं, बल्कि पुलिस बल और मीडिया कवरेज से तय होगा?

सत्ता और संत का गठजोड़

सवाल केवल सुरक्षा का नहीं है। सवाल है कि किस आधार पर एक बाबा को Y श्रेणी की सुरक्षा दी जाती है? क्या देश में ऐसे लोगों की कमी है जिन्हें सच में जान का खतरा है — सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार, महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाली महिलाएं? परंतु सरकारें चुपचाप संतों को विशेष सुरक्षा देती हैं, शायद इस डर से कि कहीं उनके अनुयायियों की नाराज़गी न झेलनी पड़े। यह सीधा 'वोट बैंक' की राजनीति का आध्यात्मिक संस्करण है।

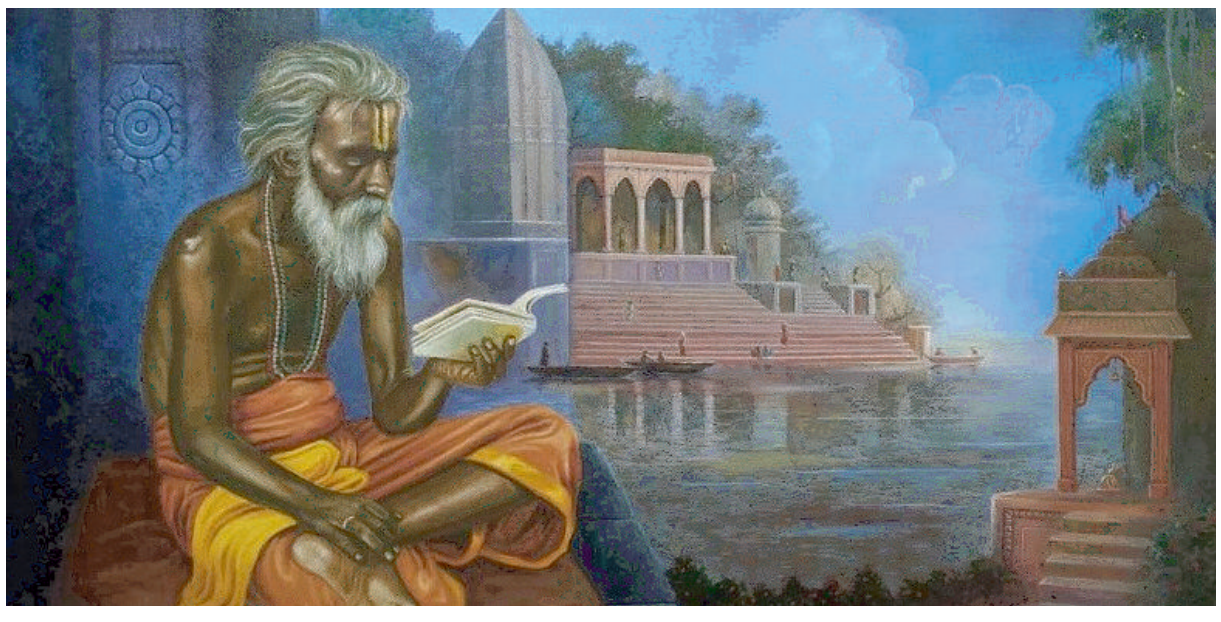

श्रद्धा या अंधभक्ति?

आखिर में बात आम आदमी की करनी होगी — उस भक्त की, जो तपती दोपहर में घंटों कतार में खड़ा रहता है, बाबा के एक दर्शन की उम्मीद में। जिसे बाबा कहते हैं, ₹मोह-माया छोड़ो₹, लेकिन वही बाबा करोड़ों के दान स्वीकार करते हैं, AC टेंट में बैठते हैं, और सुरक्षा घेरे में प्रवचन देते हैं। क्या यह श्रद्धा है या कोई सुनियोजित भ्रम? क्या यह धर्म है या प्रदर्शन?

व्यंग्य की चोट:

>बाबा बोले — "मृत्यु से मत डरो, आत्मा अमर है।"

पर खुद चलते हैं, क़िले की तरह सुरक्षा में।

भक्त बोले — "बाबा, हम तो पैदल आए हैं, आशीर्वाद दो।"

बाबा बोले — "पहले सुरक्षा घेरा पार करो!"

समाप्ति से पहले प्रश्न:

अगर मृत्यु के बाद मोक्ष ही जीवन का उद्देश्य है, और बाबा मार्गदर्शक हैं, तो फिर वे स्वयं मृत्यु से क्यों डरें? क्यों न वह सुरक्षा छोड़, उसी आस्था पर भरोसा करें, जिसका उपदेश देते हैं? या फिर मान लिया जाए कि यह पूरा खेल केवल मंच है — जहाँ भावनाओं का व्यापार होता है, और मोक्ष, माया, मृत्यु सब शब्द भर रह गए हैं।

बागेश्वर बाबा हों या कोई और, जब भी कोई संत आध्यात्मिकता के नाम पर सुरक्षा, वैभव और सत्ता का लाभ लेता है, तो उसके प्रवचनों की पवित्रता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। श्रद्धा को सुरक्षा से नहीं, सत्य से ताकत मिलती है। बाबा यदि वाकई आत्मा की अमरता में विश्वास रखते हैं, तो उन्हें सबसे पहले वाई श्रेणी सुरक्षा का त्याग करना चाहिए — क्योंकि असली संत वही है, जो सत्य के साथ निर्भय खड़ा हो।

गंगा-यमुनी तहज़ीब की मिसाल है उर्दू भाषा !

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने यह बात कही है कि उर्दू भाषा भारत की मिट्टी की भाषा है और भारत की राजभाषा हिंदी भी उर्दू के बिना अधूरी है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि भाषा को धर्म से जोड़ना ग़लत है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की बेंच ने हाल ही में एक फैसला सुनाते हुए यह बात कही है कि 'भाषा किसी धर्म की नहीं, बल्कि समुदाय, क्षेत्र और लोगों की होती है। भाषा संस्कृति होती है और समाज की सभ्यतागत यात्रा का मापदंड होती है।' वास्तव में, उर्दू को मुसलमानों की भाषा मानना एक गलतफहमी है। भाषा संस्कृति होती है और समाज की सभ्यतागत यात्रा का मापदंड होती है। माननीय कोर्ट ने यह बात कही है कि 'उर्दू भाषा गंगा-जमुनी तहजीब की सबसे बढ़िया मिसाल है और इसका जन्म भारत की भूमि पर हुआ है।' कोर्ट ने उर्दू भाषा को विदेशी या केवल एक धर्म विशेष की भाषा मानने को पूरी तरह से ग़लत बताया है।कोर्ट ने यह बात कही है कि , 'हकीकत ये है कि हिंदी भाषा का दैनिक उपयोग भी उर्दू शब्दों के बिना अधूरा है।खुद 'हिंदी' शब्द भी फारसी शब्द 'हिंदवी' से आया है।' वास्तव में सच तो यह है कि हिन्दी और उर्दू दोनों एक ही इंडो-आर्यन भाषा हैं और एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं। हिंदी और उर्दू भाषा की समानता की यदि हम यहां बात करें तो इन दोनों भाषाओं का व्याकरण और बोलने का तरीका लगभग एक जैसा है। इतना ही नहीं, दोनों ही भाषाओं में सर्वनाम और क्रियापद एक ही हैं तथा संज्ञा और विशेषण शब्दों का बहुतायत प्रयोग भी लगभग एक जैसा दिखता है। सच तो यह है कि इन दोनों भाषाओं की शब्दावली का 70-80% हिस्सा लगभग एक जैसा है। पाठकों को बताता चलूं कि उर्दू भारत की शासकीय भाषाओं में से एक है तथा हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उर्दू है। यदि हम यहां भारत की बात करें तो जम्मू और कश्मीर की मुख्य प्रशासनिक भाषा उर्दू है। इतना ही नहीं,तेलंगाना, दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश की अतिरिक्त शासकीय भाषा उर्दू ही है। हालांकि, यह बात अलग है कि उर्दू अरबी और फ़ारसी से प्रभावित है, जबकि हिन्दी संस्कृत से। गौरतलब है कि उर्दू को नस्तालिक लिपि में लिखा जाता है, जबकि हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि उर्दू में हिन्दी की तुलना में बहुत अधिक फ़ारसी और अरबी के शब्दों का इस्तेमाल होता है। गौरतलब यह भी कि उर्दू में तत्सम शब्दों का उपयोग कम किया जाता है। वास्तव में, यह एक कटु सत्य है कि हिंदी और उर्दू के बीच का विभाजन औपनिवेशिक काल में धर्म के आधार पर किया गया था, जो आज भी एक बड़ी गलतफहमी के रूप में मौजूद है। बहरहाल , यहां पाठकों को बताता चलूं कि हमारे देश में उर्दू और हिंदी का विकास लगभग एक ही कालखंड में हुआ है। दूसरे शब्दों में कहें तो उर्दू भाषा का जन्म भारत में हुआ और अलग-अलग इलाकों में इसका अपने तरीके से विकास हुआ और 75 फीसदी शब्द संस्कृत से लिए गए हैं।सच तो यह है कि उर्दू किसी भी अन्य भाषा की तरह एक भारतीय भाषा है। पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में क्रमशः 22 भाषाएं असमिया, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, बोडो, संथाली, मैथिली, डोगरी के अलावा उर्दू को भी शामिल किया गया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि ज्यादातर ऐतिहासिक संदर्भ इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उर्दू की उत्पत्ति भारत के पंजाब राज्य में हुई थी।यह स्थानीय और विदेशी भाषाओं के मेल से विकसित हुई बताते हैं।महान कवि अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक 'घुर्रतुल कमाल' में लिखा है कि 11वीं शताब्दी में लाहौर में पैदा हुए मसूद लाहौरी (मसूद साद सलमान) ने हिंदवी (उर्दू) में कविता की थी। इससे पता चलता है कि उर्दू की उत्पत्ति पंजाब में हुई थी। जानकारी देना चाहूंगा कि विभाजन से पहले लाहौर वृहद पंजाब का हिस्सा था और उर्दू नाम तुर्की शब्द 'ओरदु' या 'ओर्दा' (सेना) से लिया गया है।कहा जाता है कि यह 'शिविर की भाषा' या स्थानीय लश्करी जबान के रूप में उत्पन्न हुई थी। वास्तव में उर्दू भाषा का इतिहास 12वीं शताब्दी से जुड़ा माना जाता है। मुस्लिम विजय के बाद, उत्तर-पश्चिमी भारत में क्षेत्रीय अपभ्रंश भाषाओं का इस्तेमाल होने लगा और इन्हीं अपभ्रंश भाषाओं से ही उर्दू का विकास हुआ माना जाता है।यह भी उल्लेखनीय है कि उर्दू भाषा के विकास में फ़ारसी और अरबी भाषाओं का भी अहम योगदान रहा है। इसी शताब्दी यानी कि 12 वीं शताब्दी में ही अमीर खुसरो ने 'रेख्ता बोली' लिखी थी, जो आधुनिक उर्दू का आधार बनी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि फ़ारसी दिल्ली सल्तनत की आधिकारिक भाषा थी तथा मुगल साम्राज्य के आने के बाद हिंदुस्तानी पर फ़ारसी का प्रभाव जारी रहा। यहां यह भी गौरतलब है कि दखनी उर्दू साहित्य के प्रमुख योगदानकर्ता मीरावजी, बहाउद्दीन बहन, ख्वाजा बंदा नवाज़ गेसू दराज, मुल्ला वजही, कुली कुतुब शाह आदि थे। जानकारी मिलती है कि 16वीं शताब्दी के कवि वली दखनी की साहित्यिक परंपरा उत्तर में लोकप्रिय हुई। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि मौलवी अब्दुल हक को 'उर्दू के पिता' के रूप में जाना जाता है। यहां यदि हम इस भाषा (उर्दू भाषा) की खास बातों के बारे में जानना चाहें तो यह सामने आता है कि उर्दू भाषा की शब्दावली संस्कृत-व्युत्पन्न प्राकृत और अरबी-फ़ारसी शब्दों के बीच लगभग समान रूप से विभाजित है। यह भी उल्लेखनीय है कि उर्दू भाषा पर इस्लाम की जारी परंपराओं और सदियों पहले मुस्लिम शासकों द्वारा विदेशी संस्कृति के संरक्षण का प्रभाव दिखा। वास्तव में, यह(उर्दू)शायरी, साहित्य और अकादमिक भाषा तो ये है ही, सरकारी कामकाज की भी भाषा रह चुकी है और सबसे खास बात यह कि उर्दू आम जनजीवन की भाषा रही है। हिन्दी और उर्दू का विकास भी एक-दूसरे के समानांतर होता है और इनमें तमाम समानताएं भी हैं। बहरहाल,कहना चाहूंगा कि भाषा कोई मजहब नहीं होता और ना ही उर्दू किसी मजहब का प्रतिनिधित्व करती है।माननीय सुप्रीम कोर्ट ने उर्दू को 'गंगा-जमुनी तहजीब' और 'हिंदुस्तानी तहजीब' का एक शानदार नमूना बताते हुए कहा कि उर्दू भारत की मिली-जुली सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हिंदुस्तानी, हिन्दी और उर्दू को मिलाकर बनी एक बोली है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हिंदुस्तानी खड़ीबोली और दिल्ली के आस-पास की बोलियों से विकसित हुई मानी जाती है।1800 ईस्वी तक यह हिन्दी और उर्दू में विकसित हो गई। जानकारी मिलती है कि हिंदुस्तानी में शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द ज्यादा होते हैं। वास्तव में, हिंदुस्तानी में उर्दू और हिन्दी के सभी बोले जाने वाले रूप शामिल होते हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हिंदुस्तानी का इस्तेमाल मुस्लिम शासकों और आम लोगों के बीच संचार के लिए किया जाता था तथा इसका विकास 13वीं शताब्दी के दौरान दिल्ली और मेरठ के भारतीय शहरों में और उसके आस-पास शुरू हुआ माना जाता है। कवि वली दक्कनी ने 1700 में दिल्ली का दौरा किया था।उनकी रेख़्ता या हिंदवी ग़ज़लों ने शाही शहर में काव्य अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदुस्तानी की स्थापना की थी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट का उर्दू से जुड़े मामले में दिया गया फैसला यह बताता है कि भारत जैसे देश के लिए भाषाई विविधता कितनी जरूरी है। वास्तव में, भाषा को किसी धर्म, संप्रदाय से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। भाषा एक 'ब्रिज' यानी कि एक पुल के सदृश काम करती है, जो लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है। उम्मीद की जा सकती है कि टिप्पणियों के रूप में आई शीर्ष अदालत की नसीहत भाषाई विवाद खड़ा करने वालों को कुछ सीख दे सकेगी। ताज़ा मामला महाराष्ट्र से जुड़ा है।सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र से जुड़े इस मामले पर सुनवाई करते हुए उर्दू भाषा को लेकर अहम टिप्पणी की है। साइनबोर्ड में उर्दू होने के विरोध वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि उर्दू गंगा-जमुनी तहजीब का हिस्सा है। यह कोई विदेशी भाषा नहीं है। वास्तव में,अदालत ने यह माना कि उर्दू के प्रयोग का उद्देश्य केवल प्रभावी संवाद है। कोर्ट ने यह बात मानी है कि भारत में आबादी की तरह भाषाएं भी मिली-जुली हैं। वास्तव में उर्दू हिंदी की बहन है। इसके बिना(उर्दू के बिना) रोजमर्रा की बोलचाल भी नहीं हो सकती।सच तो यह है कि यूपी, बिहार जैसे हिंदीभाषी राज्यों को छोड़ दिया जाए, तो कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना जैसे दक्षिण के राज्यों में भी उर्दू बोलने वालों की अच्छी-खासी तादाद है। उर्दू भारत की ही भाषा है, विदेशी भाषा नहीं। कहना चाहूंगा कि उर्दू ने अपने शब्दों, साहित्य से अन्य भारतीय भाषाओं को और समृद्ध ही किया है।सच तो यह है कि उर्दू भारतीय सभ्यता-संस्कृति का अहम और महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे कोई नकार नहीं सकता है। भारत एक बहुभाषी देश है और एक बहुभाषी देश में भाषाओं को लेकर विवाद कोई नई बात नहीं है। पाठक जानते होंगे कि दक्षिण भारत में हिंदी को लेकर प्रतिरोध बहुत पुराना है। हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की वजह से भी यह मामला फिर उछला था। तमिलनाडु की डीएमके सरकार ने आरोप लगाया था कि केंद्र सरकार उन पर हिंदी थोपने की कोशिश कर रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस तरह के विवादों में आम लोगों की संवेदनाएं, पुरानी धारणाएं और राजनीति प्रमुख भूमिका निभाती हैं, लेकिन माननीय सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के बाद यह समझने की जरूरत है कि भाषा धर्म नहीं है... यह एक समुदाय, क्षेत्र और लोगों की होती है, धर्म की नहीं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

हर श्वास में छिपा है जीवन का आनंद: प्रेम रावत

जगदीश सीरवी

भैरहवा: नेपाल 19 अप्रैल 2025, अंतर्राष्ट्रीय वक्ता, लेखक एवं शांति दूत प्रेम रावत ने आज नेपाल में हज़ारों श्रोताओं को सम्बोधित किया। यह कार्यक्रम आत्मज्ञान प्रचार संघ नेपाल द्वारा गौतम बुद्ध अंतरराष्ट्रीय मैदान, सैनामैना नगर पालिका वार्ड नंबर 7, रूपन्देही (बुटबल के पास) में आयोजित किया गया। प्रेम रावत जी ने कहा ₹मैं आज यहाँ आया हूँ तुमको याद दिलाने के लिए कि मनुष्य जन्म अनमोल है और यह फिर नहीं मिलेगा। तुम्हारे अंदर अनेक अच्छाइयाँ हैं - तुम्हारे अंदर दया है, तुम्हारे अंदर करुणा है। तुम्हारे अंदर वे सारी चीजें हैं जिससे मनुष्य का कल्याण हो सकता है। प्रेम रावत ने कहा ₹जीवन में खुश होने के लिए ही हम सब कुछ करते हैं, परंतु असली खुशी हमारे हृदय में है। ₹खुश रहो क्योंकि तुम्हारे अंदर यह श्वास आ रहा है। श्वास का आना-जाना ही बनाने वाले की कृपा हैं। जब तक तुम श्वास की कीमत नहीं समझोगे तब तक तुम नहीं जानोगे कि यह जीवन कितना दुर्लभ है। इस श्वास को पहचानो, श्वास को जानो, इसमें तुम्हें वह चीज मिलेगी जो तुम्हें खुशी दे सकती है।₹उन्होंने यह भी बताया कि प्यार के बिना कोई रिश्ता नहीं है, सारे रिश्ते-नाते प्यार से हैं। तुम्हारा तुम्हारे साथ क्या रिश्ता है? प्यार का है, आभार का है या कुछ और है? प्यार का नाता होता है जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना। असली प्यार के नाते ही तुम दूसरों में बुराई नहीं देखते हो, अच्छाई देखते हो। उन्होंने आगे कहा ₹ज्ञान दो प्रकार के होते हैं। एक है स्वम्का ज्ञान और एक है दुनिया का ज्ञान। एक से आनंद मिल सकता हैं और एक से आनंद नहीं मिलेगा चाहे कितना भी ज्ञान हो जाए। जिसकी तुम्हें तलाश हैं वह तुम्हारे अंदर हैं, उसको जानो। तुम उसका ध्यान कर सकते हो और अपने जीवन को आनंद से भर सकते हो।₹ इस कार्यक्रम में नेपाल-लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' शामिल है। इससे पहले यह अवॉर्ड नोबेल पीस प्राइज विजेता नेल्सन मंडेला और स्टीव जॉब्स को प्रदान किया गया है। एक लेखक होने के अलावा, प्रेम रावत ₹द प्रेम रावत फाउंडेशन के संस्थापक भी हैं। यह संस्था भोजन, पानी और शांति जैसी बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य करती है। इसकी ₹जन भोजन₹ पहल भारत, नेपाल, घाना और दक्षिण अफ्रीका में प्रतिदिन जरूरतमंद बच्चों और बीमार वयस्कों को पौष्टिक भोजन प्रदान करती है। उनके व्याख्यानों पर आधारित ₹पीस एजुकेशन प्रोग्राम' 1,400 से अधिक शैक्षिक एवं अन्य संस्थानों में दिखाया जाता है, जिससे 5 लाख से अधिक लोगों को प्रभावित किया है। यह कार्यक्रम 1,000 से अधिक जेलों में भी चल रहा है, जिसके प्रभाव से कैदियों में दोबारा अपराध करने की संभावना कम पायी गई है। वर्ष 2023 में प्रेम रावत ने टीवी, प्रिंट और रेडियो सहित विभिन्न मीडिया माध्यमों से 91.6 करोड़ लोगों तक अपना संदेश पहुँचाया। उनका पॉडकास्ट चैनल ₹ लाइफ एसेंशियल्स 110 से अधिक देशों में सुना जाता है। उनकी किताबें ₹स्वयं की आवाज़₹ और ₹ शांति संभव है।दुनिया भर में सराही गई हैं। प्रेम रावत केवल एक वक्ता या लेखक ही नहीं, बल्कि एक आविष्कारक, संगीतकार, कलाकार, फोटोग्राफर और कुशल जेट व हेलीकॉप्टर पायलट भी हैं, जिनके पास 15,000 घंटे के उड़ान समय का अनुभव है। वे विवाहित हैं और उनके चार बच्चे और चार पोते-पोतियाँ हैं।प्रेम रावत के कार्यों को सरकारों, गैर-लाभकारी संगठनों, व्यापारिक संस्थानों और दुनिया भर के नागरिक संगठनों द्वारा स्वीकार किया गया है। उन्होंने ब्रिटेन से लेकर न्यूजीलैंड तक की संसदों में और हार्वर्ड व ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में व्याख्यान दिए हैं। 2011 में, प्रेम रावत यूरोपीय संघ के एक विशेष कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे, जहाँ उन्होंने ₹शांति की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किये और उन्हें इसका एंबेसडर घोषित किया गया ।

सीरवी समाज ट्रस्ट, लग्गेरे, बेंगलुरू द्वारा नवनिर्मित आई माता मंदिर बड़ेर में धर्मगुरु दीवान माधव सिंहजी के सान्निध्य में 4 जून को आयोजित होने वाले प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लेने के लिए सीरवी समाज, आईलापुर के पदाधिकारियों को आमंत्रित करते नेमाराम बर्फा, ओमप्रकाश हाम्बड़। अवसर पर उपस्थित महासभा उपाध्यक्ष माणकचन्द गेहलोत,मल्लाराम सोलंकी , राजुराम बर्फा, धर्माराम बर्फा व अन्य ।

21 अप्रैल : राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस विशेष

प्रशासनिक शक्ति के हैं प्राण...!

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस भारत की शान,
यहीं राष्ट्र की प्रशासनिक शक्ति के हैं प्राण।
समर्पण, निष्ठा, कर्तव्यपरायणता हैं उत्सव,
देश को एकजुट रखकर प्रगति करें वास्तव।
नीतियाँ कागज से जमीनी हकीकत तब्दील,
विकास योजनाएँ गाँव-गाँव में जाती हैं मिल।

राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस भारत की शान,
यहीं राष्ट्र की प्रशासनिक शक्ति के हैं प्राण।
संकट के समय देश को संभालना होता हैं,
हमें अमूल्य योगदान को सराहना होता हैं।
प्रशासन को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं,
नए संकल्प भी हमारे सामने लेकर आते हैं।

संजय एम तराणेकर

रेलवे लाइन निर्माण के विरोध में ग्रामीणों और पुलिस के बीच झड़प, एक की मौत

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : पुलिस-ग्रामीण संघर्ष में एक की मौत। रेलवे लाइन के निर्माण का विरोध कर रहे ग्रामीणों और पुलिस के बीच झड़प हो गई है। राउरकेला के बांधमुंडा बरकानी में पुलिस और ग्रामीणों के बीच झड़प देखी गई। ग्रामीणों ने रेलवे लाइन के निर्माण का बार-बार विरोध किया था।पिछले 40 दिनों से ग्रामीण निर्माण स्थल पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।अब पुलिस की मौजूदगी में काम शुरू होने पर ग्रामीण और पुलिस आमने-सामने आ गए। गोलीबारी में एक ग्रामीण की मौत हो गई। इसी तरह, खून से लथपथ तहसीलदार पुरुषोत्तम नायक सहित 10 पुलिसकर्मी और कुछ ग्रामीण भी घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रेलवे निर्माण स्थल पर एक व्यक्ति की मौत के बाद तनाव बढ़ गया है।

नींबू पानी वितरण किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा की अध्यक्षा शीतल जैन के नेतृत्व में बालाजी स्वीट आरपी रोड बाटा के पास राष्ट्रीय प्रकल्प अमृतधारा के तहत नींबू पानी का कार्यक्रम रखा गया! इसका लाभ 1500 लोगों ने लिया! इस कार्यक्रम के लाभार्थी परिवार शाखा की सदस्या पूनम बोहरा के एनिवर्सरी के उपलक्ष में रखा गया!!इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वर्षा मखाना, रक्षा जैन,वंदना दूग्गड़, मोना सोनी, प्रीति सोनी, पुष्पा कोठारी, सुरेखा सुराणा, वीना जैन, सोनू वर्मा, अर्चना बोहरा, माया, अनीता सुराना, रिद्धि, सिद्धि, उर्मिला, स्मिता सेठिया, माही सोनी, आशा डाफरिया, संध्या बोहरा, निशिता सेठिया, सरला मेहता, आदि का सहयोग रहा! सहमंत्री सुनीता डूंगरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया। एवं इस कार्यक्रम को सफल बनाने में नारायण जी छावड़ा का सराहनीय सहयोग रहा।

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा छाछ वितरण का शुभारंभ किया गया

हैदराबाद सिकंदराबाद शाखा मंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेसविज्ञप्ति के अनुसार सिकंदराबाद शाखा अध्यक्ष पंकज राठौर की अध्यक्षता में राष्ट्रीय प्रकल्प अमृत धारा के तहत 3100 गीलास छाछ वितरण किया गया बालाजी बाबुलाल मिठाई भण्डार पालिका बाजार सिकंद्राबाद में किया गया इस अवसर प्रांतीय निवर्तमान रक्तदान संयोजक मनोज जैन,वरिष्ठ नारायण चावडा , हरिप्रसाद व्यास , राजेश व्यास, रमेश कुमार प्रजापत मंगलाराम चोधरी, हरीश माली,नवीन भाई ,आदि का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए सभी अतिथियों का एवं सदस्यों गणों का शाखा के अमृत धारा संयोजक जीतू चावड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पीएम पुरस्कार से नवाजे जायेगें मोदी के हाथों झारखंड के आईएएस रवि शंकर शुक्ला

पहले भी मोदी कर चुके हैं इनकी तारीफ

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, झारखंड गठन के बाद पूर्व दो देशी रियासतों(States) को लेकर बना अनुमंडल बिहार में राजनीतिक कारण वश काफी उपेक्षित रहा । 2001 मे नया झारखंड बनने के साथ 22 वां जिला का रूप में सरायकेला खरसावां उभरा। जहां के औद्योगिक इलाका गम्हरिया प्रखंड को अब आकांक्षी प्रखंड के रूप में केंद्र ने चयनित किये हुए हैं ।इसी जिले के 33 वें जिलाधिकारी के रूप में कार्यरत रवि शंकर शुक्ला को अब अपनी प्रशासन में उत्कृष्टता लाने के लिए पीएम अवार्ड से भारत के प्रधानमंत्री सोमवार को अलंकृत करने जा रहे हैं ।

इसको लेकर दिल्ली में आयोजन होने वाली है । सिविल सेवा दिवस समारोह में उपायुक्त शुक्ला को जन प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए पीएम पुरस्कार -2024 दिया जा रहा है ।

ज्ञात हो कि आकांक्षात्मक ब्लॉक कार्यक्रम श्रेणी के तहत 5 शीर्ष प्रदर्शन करने वाले ब्लॉकों को दिल्ली में सम्मानित किया जाना है । यह पुरस्कार 21 अप्रैल, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित होने वाली सिविल सेवा दिवस पर भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रदान किया जायेगा ।

इस दिवस पर झारखंड के तमाम प्रशासनिक महफ़िल के लिए गौरव की बात होगी जब अपने ही राज्य में भारतीय प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी रविशंकर शुक्ला संप्रति उपायुक्त, सरायकेला-खरसावां
अपने एक ब्लॉक गम्हरिया के लिए पुरस्कार लेंगे । सनद रहे कि देश भर के 500 आकांक्षात्मक ब्लॉक में प्रथम स्थान सरायकेला खरसावां के- गम्हरिया ने प्राप्त किया है।

आकांक्षात्मक ब्लॉक कार्यक्रम योजना आयोग के जगह पर बनी नीति आयोग की एक सकारात्मक पहल है, जिसे 7 जनवरी 2023 को लॉन्च किया गया था, जो स्वास्थ्य और पोषण, शिक्षा, कृषि और संबद्ध सेवाओं, बुनियादी ढांचे और सामाजिक विकास जैसे पांच फोकस क्षेत्रों में बेहतर शासन, सेवा का वितरण और प्रमुख संकेतकों की निगरानी के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी लाकर देश के 500 अविकसित ब्लॉकों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने पर केंद्रित है। जिला प्रशासन सरायकेला खरसावां ऐसी उपलब्धि के लिए सभी हितधारकों की कड़ी मेहनत और योगदान की सराहना किया है ।साथ ही प्रमुख संकेतकों के संदर्भ में जिले के समग्र विकास को प्राप्त करने और जिले भर में सेवाओं की समग्र गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करता है।

मुल रूप से उत्तर प्रदेश के रहने वाले इस अधिकारी के पिता रामा शंकर शुक्ला इसी सिंहभूम जिले के जमशेदपुर न्यायालय में न्यायाधीश रहे हैं ।बाद में जिला सत्र न्यायालय के रूप में आप हजारीबाग में पदस्थापित हुए । रविशंकर शुक्ला की प्रवेशिका विज्ञान की पढ़ाई साकची स्थित करीम सीटी कालेज से हुई है । इसके बाद आई आई बी ,आई आई एम की पढ़ाई उन्होने लखनऊ से किया है । उसके बाद बैंगलोर से जल प्रबन्धन में भी शिक्षा ली । साथ ही उच्चशिक्षा ग्रहण करने स्वीडन भी गये ।2012-13 मे जब उनके पिता हजारीबाग के जिला सत्र न्यायाधीश थे तब वे भारतीय प्रशासनिक सेवा मे सफलता अर्जित की । तत्कालीन उपायुक्त हजारीबाग मनीष रंजन ने उन्हें मार्गदर्शन किया है ।वही मनीष रंजन जिनकी किताबें आई ए एस तैयारी में उपयोगी रही है । इनकी किताबें वेस्ट सेलर की श्रेणी में आता हैं ।कोचिंग संस्थान इनकी झारखंड का सामान्य ज्ञान , डिसिजन मेकिंग एंड प्राब्लम सोल्विंग ,
सी एस एंटी खंड एक एवं दो आदि के अध्ययन हेतु अनुशंसा करते हैं ।

रवि शंकर शुक्ला हजारीबाग में भी उपायुक्त रहे हैं । जहां जिलाधिकारी रहते रवि शंकर शुक्ला ने स्वच्छता मिशन पर काफी कार्य किया है । सनद रहे कि स्वच्छता मिशन में तब हजारीबाग झारखंड में अब्बल रहा तथा समुचे भारत वर्ष में तीसरे स्थान पर रहा । इसकी तारीफ उन दिनों प्रधानमंत्री मोदी कर चुके हैं । तब उस कार्यक्रम का ब्रांड एम्बेसडर अक्षय कुमार ने इन्हे मुम्बई बुलाकर सम्मानित किया था । हजारीबाग का उपायुक्त रहते रविशंकर शुक्ला ने स्वच्छता मिशन में काफी बेहतर कार्य किया। स्वच्छता रैंकिंग में हजारीबाग झारखंड में नंबर वन व देश भर में तीसरे पायदान पर रहा। स्वच्छता मिशन के ब्रांड एंबेसडर अभिनेता अक्षय कुमार ने इस उपलब्धि पर उपायुक्त रविशंकर शुक्ला को मुंबई में सम्मानित किया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने हजारीबाग के कार्यक्रम के दौरान हजारीबाग के स्वच्छता मिशन की तारीफ की थी।2023 में लैंड रिकार्ड मोडेनाईजेशन में इन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया था। दुमका जिले में रहते इन्हें राष्ट्रपति के हाथों भूमि पुरस्कार मिला था । मौजूदा राज्यपाल झारखंड भी उन्हें राष्ट्रीय जल दिवस पर सम्मानित कर चुके हैं । इसके पूर्व 2019 में नीति आयोग इन्हें चैंपियन अफ चैंज का खिताब दे चुका है ।

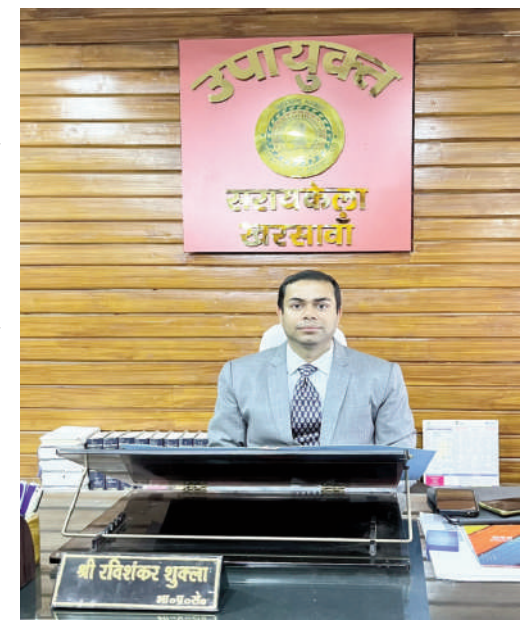

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023